"माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक कठिनाइयों का तुलनात्मक अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
एम.एड. उपाधि की आंशिक
पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबन्ध

सत्र 2012-13

निर्देशक
डॉ० अमरनाथ दत्त गिरि
(विभागाध्यक्ष -शिक्षा संकाय)
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
अतर्रा (बाँदा), उ०प्र०

शोधकर्त्री
प्रियंका शुक्ला
(एम.एड.छात्रा)

शोध केन्द्र
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा
बाँदा (उ०प्र०)

''माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक कठिनाइयों का तुलनात्मक अध्ययन''

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
एम.एड. उपाधि की आंशिक
पूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबन्ध

सत्र 2012-13

निर्देशक
डॉ० अमरनाथ दत्त गिरि
(विभागाध्यक्ष -शिक्षा संकाय)
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,
अतर्रा (बाँदा), उ०प्र०

शोधकर्त्री
प्रियंका शुक्ला
(एम.एड.छात्रा)

शोध केन्द्र
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा
बाँदा (उ०प्र०)

शोध निर्देशक प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रस्तुत लघु शोध कार्य "माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक कठिनाईयों का तुलनात्मक अध्ययन" शोधकर्त्री 'प्रियंका शुक्ला', एम०एड० छात्रा ने मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया है। उन्होंने प्रस्तुत विषय पर उपलब्ध सामग्री का सम्यक् प्रयोग किया है। यह उनकी मौलिक कृति है।

मैं उनके इस कार्य एवं इस कृति से पूर्ण रूप से संतुष्ट हूँ तथा ईश्वर से उनके स्वर्णिम भविष्य की कामना करता हूँ।

दिनांक : 15.04.13

डॉ० अमरनाथदत्त गिरि
(विभागाध्यक्ष)
शिक्षा संकाय, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज
अतर्रा (बाँदा)

घोषणा-पत्र

मैं शोधकर्त्री प्रियंका शुक्ला यह घोषणा करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध कार्य "माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक कठिनाईयों का तुलनात्मक अध्ययन", मेरा मौलिक कार्य है। मेरी पूर्ण जानकारी और विश्वास के अनुसार इस विषय पर शोधकार्य अन्यत्र कहीं भी किसी अन्य के द्वारा प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मेरी कामना है कि ईश्वरीय कृपा से, पूज्य गुरूजनों एवं श्रद्धेयजनों के स्नेहिल आशीर्वाद से मेरा यह प्रयास सफल सिद्ध हो।

दिनांक : 15.04.13

Priyanka

प्रियंका शुक्ला

(एम०एड० छात्रा)

आभार-पत्र

प्रस्तुत शोध कार्य केवल मेरा प्रयास नहीं है, वरन् यह कुछ विद्वान, महानुभावों की अनुकम्पा का फल है। मैं उन सभी के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ।

सर्वप्रथम मैं अपने शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष तथा इस लघुशोध के निर्देशक डॉ० अमरनाथ दत्त गिरि जी का पूर्ण विनम्रता के साथ हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके वात्सल्यपूर्ण कुशल निर्देशन एवं श्रमपूर्ण पथ प्रदर्शन के द्वारा मेरा यह शोधकार्य पूर्ण हो सका।

मैं अपने महाविद्यालय के अन्य शिक्षकों डॉ० अरिमर्दन सिंह, डॉ० प्रताप सिंह सेंगर, डॉ० राजीव अग्रवाल तथा डॉ० सुशील कुमार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, क्योंकि उनके प्रोत्साहन, सहयोग तथा मार्ग दर्शन ने मुझे अपार बल दिया, परिणामस्वरूप यह लघु शोध पूर्ण हो सका।

मैं अपने माता-पिता की आजीवन आभारी रहूँगी जिनके प्रोत्साहन एवं श्रम से मैने अपनी शिक्षा पूर्ण की।

अन्त में मैं सृष्टि के निर्माता परम् परमेश्वर को सतत् नमन करती हूँ, जिसने मुझे इस कार्य को पूर्ण करने की शक्ति एवं साहस प्रदान किया।

मेरा ये विनम्र प्रयास शिक्षा जगत् में कार्यरत् शिक्षकों, शिक्षार्थियों एवं प्रशासकों को यदि किंचित लाभ भी पहुँचा सका तो मैं अपने प्रयास को सार्थक समझूँगी।

शोधकर्त्री

Priyanka

प्रियंका शुक्ला

(एम०एड० छात्रा)

अध्याय : अनुक्रमणिका

अध्याय प्रथम

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। यह जन्म से मृत्यु तक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति मे जन्म से जो शक्तियाँ विद्यमान होती हैं, उनका विकास करके वह अपने ज्ञान एवं कला कौशल का विकास करता है। व्यक्ति अपने विकास के लिए जन्मजात शक्तियों तथा भौतिक एवं सामाजिक शक्तियों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए वातावरण के साथ क्रिया–प्रतिक्रिया करता रहता है। इसी क्रिया–प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उसे ज्ञान और अनुभव प्राप्त होता है और वह सभ्य, संस्कृत व योग्य नागरिक बनता है।

वास्तव में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की प्रयोजन प्रक्रिया है। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन से सम्बन्धित है। शिक्षा का कार्य बालक के वर्तमान और भावी जीवन का निर्माण करना है तथा विकास के लिये उपयुक्त वातावरण और साधन प्रदान करना है। अतः "मानव विकास का मूल साधन ही शिक्षा है।"

शिक्षा की परिभाषा :

शिक्षा की परिभाषा ज्ञान देने तक ही सीमित नहीं की जा सकती है। शिक्षा, जब तक जीवन के मूल्यों आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती।

सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन ने व्यक्त किया है कि– "शिक्षा सूचना प्रदान करने एवं कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नहीं है, इसे शिक्षित व्यक्ति के मूल्यों का विचार भी प्रदान करना है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यक्ति भी नागरिक हैं, जिस समुदाय में वे रहते हैं उस समुदाय के प्रति उनका भी उत्तरदायित्व है।" **प्लेटो** ने इसी सन्दर्भ में कहा है "शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो

अच्छी आदतों द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करता है।"[1] **अरस्तु** "शिक्षा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है।"[2]

कान्ट–"शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है, जिस पर वह पहुँच सकता है।"

चूँकि परिवार हमारे समाज की लघु इकाई है। अतः शिक्षा का बहुत कुछ उत्तरदायित्व परिवार पर आता है। परन्तु वर्तमान समय में यह दायित्व विद्यालयों तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं पर भी आ गया है। परन्तु इससे परिवार का महत्व कम नहीं होता। बालक की आदिगुरू उसकी माता ही होती है। अतः माता की शिक्षा अति महत्वपूर्ण मानी जाती है। यदि मानव जाति उन्नति चाहती है तो पहले नारी को शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण और सुविकसित बनाना होगा। तभी मनुष्यों में सबलता, सक्षमता, सद्बुद्धि, सद्गुण और महानता के संस्कारों का उदय हो सकता है।

मनुष्य समाज दो भागों में बँटा हुआ है, नर तथा नारी। आजकल नर की उन्नति, सुविधा और सुरक्षा के लिये तो प्रयत्न किया जाता है, परन्तु नारी हर क्षेत्र में पिछड़ी है, फलस्वरूप हमारा आधा राष्ट्र, आधा समाज, आधा परिवार, आधा जीवन पिछड़ा हुआ रह जाता है।

नेपोलियन ने कहा था– "If you give me educated mother, I shall give you good nation."

स्वामी विवेकानन्द ने कहा "नारियों की अवस्था में सुधार न होने तक विश्व के कल्याण का कोई मार्ग नहीं है। ठीक उसी तरह जैसे एक पक्षी का एक पंख के सहारे उड़ना नितान्त असम्भव है।"

---

[1] शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त – रामशकल पाण्डेय
[2] शैक्षिक सिद्धान्त – पी०डी० पाठक

गाँधी जी ने कहा– "If you educate a man, you educate one person, If you educate a woman, you educate entire family"

"देवी माँ सहचरि प्राण" भारतीय परम्परा में नारी के इतने रूप बताये है कविवर पन्त ने। पर क्या पुरूष ने नारी के इन रूपों का सम्मान करके उसकी शिक्षा–दीक्षा की व्यवस्था की? उसका उत्तर सुनिये स्वामी विवेदानन्द से–स्त्रियों को सदैव असहायता और दूसरों पर दासवत् निर्भरता की शिक्षा दी गयी।

किन्तु आज नारी की विवशता की जंजीर की कड़ियाँ चटक कर टूट रही हैं, नारी घर की चहार दीवारी के अन्दर घुट–घुटकर जिन्दगी के दिन काटने वाली अनपढ़ घूँघट की गुड़िया नहीं है। वह आज शिक्षित महिला के रूप में बाह्य जगत में प्रवेश कर रही है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष से होड़ ले रही है। यह सब क्यों और कैसे हुआ? स्त्री शिक्षा की आरम्भिक तस्वीर क्या थी? वह कैसे बिगड़ी और कैसी बन रही है? इसको जानने के लिए स्त्री शिक्षा के इतिहास पर नजर डालनी आवश्यक है।

भारत में स्त्री शिक्षा के विकास का संक्षिप्त इतिहास :

प्राचीन भारत में स्त्री वर्ग का स्थान सर्वोपरी था। स्त्रियाँ विदुषी, मंत्री, परामर्शदात्री एंव अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य करती थीं। उन्हे पुरूषों के समान शिक्षा सुविधायें प्राप्त थीं। विदेशी आक्रामकों की सभ्यता ने भारतीय स्वच्छंद नारी को समाजिक मान्यताओं के अन्तर्गत जकड़ने में विवश कर दिया। मुस्लिम कालीन शासकों की स्वेच्छाचारिता की मनोवृत्ति ने भारतीय नारी को घर की चहार दीवारी में बन्द होने को बाध्य किया। पर्दाप्रथा इस काल का अभिशाप थी, जिसने स्त्री शिक्षा की प्रगति में अवरोध उत्पन्न किया। अंग्रेजी शासक काल के अंतिम 100 वर्ष में विदेशी मिशनरियों की सहायता से स्त्री शिक्षा के विकास का कार्य प्रारम्भ हुआ।

विकास के दृष्टिकोण से स्त्री शिक्षा के विकास को दो कालों में विभक्त किया जा सकता है। (1) पूर्व स्वतंत्रताकालीन विकास (2) उत्तर स्वतंत्रताकालीन विकास

पूर्व स्वतंत्रताकालीन स्त्री शिक्षा का विकास :

भारत में सर्वप्रथम 1849 ई0 में भारत के तत्कालीन केन्द्रीय सरकार परामर्शदाता, ड़ी0डब्ल्यू0 वेथून, जो संवैधानिक मामलों में भारत सरकार को परामर्श देते थे, ने अपने व्यक्तिगत धन से स्त्री शिक्षा संस्था की स्थापना की थी। इसके पश्चात् विदेशी मिशनरियों के भारत में धर्म प्रचारार्थ स्त्री शिक्षा की संस्थायें स्थापित कीं। सरकार ने स्त्री शिक्षा की व्यवस्था का उत्तरदायित्व अपने ऊपर नहीं लिया था बल्कि सम्पूर्ण शिक्षा का उत्तरदायित्व व्यक्तिगत प्रयासों पर डाल रखा था। विदेशी ईसाई मिशनरियों ने इस प्रयास में पहल की। 1851 ई0 तक 371 स्त्री शिक्षालय, जिनमें 86 सामाजिक विद्यालय स्थापित हो चुके थे। 1857 ई0 तक समूचे भारत में 11,193 बालिकाओं एवं महिलाओं के लिए शिक्षा संस्थाओं की व्यवस्था की जा चुकी थी। **1854 के वुड के शिक्षा आदेश पत्र** ने स्त्री शिक्षा की व्यवस्था को व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा ही संचालित करने की संस्तुति की थी। कलकत्ता विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम और तत्पश्चात् बम्बई व मद्रास विश्वविद्यालयों ने स्त्री वर्ग के लिए मैट्रिकुलेशन कक्षाओं में प्रवेश खोल दिया।

1882 ई0 के **भारतीय शिक्षा आयोग** ने स्त्री शिक्षा पर अनुदान देने की संस्तुति की थी। अतः भारत सरकार ने स्त्री शिक्षा संस्थाओं को आर्थिक अनुदान देना प्रारम्भ किया। इस शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में 6107 बालिका संस्थाओं में 4,47,470 बालिकाओं के लिए शिक्षा सुविधाएं उपलब्ध की गयीं। इन 6107 बालिका संस्थाओं में 467 माध्यमिक विद्यालय तथा 12 महाविद्यालय थे। 1904 ई0 में श्रीमती ऐनीबेसेन्ट ने **वाराणसी सेन्ट्रल हिन्दू बालिका विद्यालय** की स्थापना की। 1916 में

लेडी हार्डिंग मेडिकल महाविद्यालय, दिल्ली की स्थापना ने स्त्री शिक्षा के विकास में बहुत योगदान दिया। जनता और सरकार दोनों ही स्त्री शिक्षा विकास में रूचि लेने लगे। प्रथम विश्व युद्ध के कारण भारत में चिकित्सा व्यवस्था की आवश्यकता अनुभव करते हुए अन्य चिकित्सा महाविद्यालयों की स्थापना पर विचार किया गया तथा इनमें महिलाओं को प्रवेश देने में वरीयता दी गयी। फलतः 1917 ई0 तक 18,827 स्त्री शिक्षा संस्थायें स्थापित हो चुकी थीं। इनमें 689 माध्यमिक विद्यालय, 12 महाविद्यालय तथा 4 व्यावसायिक महाविद्यालय थे। (तुलनात्मक शिक्षा– डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे, पी0 658)

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् आर्य समाज द्वारा स्त्री शिक्षा में क्रांति लायी गई। अनेक कन्या पाठशालाओं तथा महाविद्यालयों की स्थापना की गयी। राजस्थान तथा पूना में **डॉ0 कर्वे** ने महिला शिक्षा संस्थायें स्थापित कीं। महात्मा गाँधी, गोखले, राष्ट्रीय मनोवृत्ति के आर्य सन्यासी और नेता स्त्री शिक्षा के विकास में योगदान देते रहे। 1917 ई0 में 12,30419 छात्रायें शिक्षा पा रही थीं, परन्तु 1947 ई0 तक 16,284 सामान्य महाविद्यालयों में पढ़ने वाली तथा 40,843 औद्योगिक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पढ़ने वाली छात्रायें थीं। इस समय लगभग 33 हजार छात्रायें शिक्षा पा रही थीं। सरकार की ओर से राष्ट्रीय नेताओं के आन्दोलनों द्वारा यातायात सुविधाओं, छात्रवृत्तियों एवं अन्य सुविधाओं की व्यवस्था की गई। सरकार ने अनेक आदर्श कन्या विद्यालय स्थापित किये। इनका अनुकरण करते हुये व्यक्तिगत प्रयासो में भी वृद्धि हुई।

उत्तर स्वतंत्रताकालीन स्त्री शिक्षा का विकास :

भारत के स्वतंत्र हाते ही संवैधानिक रूप से स्त्रियों को पुरूषों के समान अवसर एवं समानता की सुविधायें उपलब्ध की गयीं। स्त्रियों को पुरूषों के समान अभियंत्रण, चिकित्सा तथा अन्य व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने की सुविधायें दी गयीं।

एल0एन0डी0टी0 महिला विश्वविद्यालय, पूना एवं बम्बई, **बड़ौदा विश्वविद्यालय, महिला विद्यापीठ वनस्थली (उदयपुर)** आदि संस्थायें स्त्री शिक्षा के विश्व विद्यालयीय स्तर वाले संस्थान हैं। इनके अतिरिक्त भी विविध सैकड़ों महाविद्यालय एवं व्यवसायिक महाविद्यालय हैं। **लक्ष्मीबाई शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय ग्वालियर** तथा **गृहविज्ञान एस0एन0डी0टी0 महाविद्यालय बम्बई, डोमेस्टिक साइंस प्रशिक्षण महाविद्यालय हैदराबाद, महिला राजकीय गृह विज्ञान महाविद्यालय इलाहाबाद** आदि संस्थायें एक मात्र महिलाओं के लिये स्थापित की गईं। 1958 में केन्द्रीय सरकार ने **राष्ट्रीय स्त्री शिक्षा समिति** नियुक्त की थी, जिसकी संस्तुति पर 1959 में **राष्ट्रीय स्त्री शिक्षा परिषद** का गठन किया गया। यह परिषद स्त्री शिक्षा के विकास के लिये विविध योजनायें बनाती है और व्यवस्था के लिये केन्द्रीय सरकार को परामर्श भी देती है।

(तुलनात्मक शिक्षा—डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे, पेज सं0 658—59—60)

स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा की प्रगति :

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय सरकार ने स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिये अधिक उत्साह का प्रदर्शन किया। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में स्त्री शिक्षा प्रगति के निरंतर प्रयास किये गये। वहीं स्त्री शिक्षा के बारे में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि स्त्री शिक्षा का प्रसार केवल विकसित क्षेत्रो में हो रहा है। पिछड़े हुये तथा ग्रामीण क्षेत्रों में जहां स्त्री शिक्षा की प्रगति अत्यन्त आवश्यक थी, स्त्री शिक्षा का प्रसार अत्यन्त मन्द रहा था।

पहली दो पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत स्त्री शिक्षा के लिये कुछ राज्यों में अलग से धन की व्यवस्था की गई। अधिकांश राज्यों में स्त्री शिक्षा की समस्या की गम्भीरता कम करने के लिये तथा बालिकाओं के लिये अधिक संख्या में स्कूल खोलने के लिये धन उपलब्ध नहीं कराया गया। प्रथम पंचवर्षीय योजना में 6—11

वर्ष की उम्र की बालिकाओं की 8 प्रतिशत वृद्धि हुई। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में 7 प्रतिशत की वृद्धि हुयी।

तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि के अन्तर्गत बलिकाओं की शिक्षा के लिये अनेक साधन उपलब्ध कराये गये। ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापिकाओं को अतिरिक्त वेतन तथा आवास व छात्रावास उपलब्ध कराये गये। इस कारण बालिकाओं की संख्या प्राथमिक स्तर पर 55 प्रतिशत, माध्यमिक स्तर पर 26 प्रतिशत, उच्च शिक्षा स्तर पर 24 प्रतिशत हो गयी।

चौथी योजना में बालिकाओं की शिक्षा के लिये विशेष योजनायें बनायी गईं। बालिकाओं की शिक्षा के लिये काफी सुधार किये गये। इसके लिये एक लक्ष्य रखा गया। इस योजना में शिक्षा के लिये 712 करोड़ रूपये व्यय किये जाने थे लेकिन 680 करोड़ रूपये ही व्यय किये गये।

पाँचवी योजना प्रस्तावित रूपरेखा में शिक्षा के लिये अब तक की सभी योजनाओं से अधिक एवं चौथी योजना के दुगने से भी अधिक व्यय किये जाने का सुझाव दिया गया।

वर्ष 1968–69 से 1978–79 तक 10 वर्षो के दौरान स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में हुई प्रगति का वार्षिक विकास की दृष्टि से अवलोकन करें तो देखते है कि कक्षा 1 से 5 तक पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या में 32 प्रतिशत की तथा 6 से 8 तक 5.5 प्रतिशत का वृद्धि हुई। 1978–79 में स्कूलों में पढ़ने वाली कुल छात्राओं की संख्या 3.64 करोड़ थी। प्राथमिक स्तर पर लड़कियों की संख्या 2.82 करोड़, माध्यमिक स्तर पर 61.9 लाख, उच्च स्तर पर 19.7 लाख थी।

छठी योजना में यह लक्ष्य निर्धारित किया गया कि 1985 के अन्त तक 6–11 आयु वर्ग की 81 प्रतिशत बालिकाओं को तथा 11–14 आयु वर्ग की 37 प्रतिशत बालिकाओं को शिक्षित बनाया जाये। वस्तुतः यह स्थिति भी स्त्री शिक्षा के लिये

सन्तोषप्रद नहीं कही जा सकती है। इसके बाद स्त्री शिक्षा का विकास होता रहा है।

भारतीय में बालिकाओं की स्थिति :

दुनियाँ के कई अन्य हिस्सों की तरह बलिकायें ऐसी संस्कृति में जन्म लेती हैं और पलती–बढ़ती हैं, जो उनके प्रति नकारात्मक मूल्य रखता है। उसके जन्म से लेकर, बल्कि जब गर्भ में होती है तभी से उसके प्रति भेदभाव बरता जाता है। उनका विकास पारम्परिक रूप से पुरूष प्रधान है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व्यवस्था में अनपेक्षित, अपरिष्कृत, उपेक्षित और द्वितीय दर्जे की नागरिकता स्वीकार करने के लिए किया जाता है। गहरे भीतर तक जड़ें जमाये बैठे सामाजिक पूर्वाग्रह यह सुनिश्चित करते हैं कि वह वंचना, शर्मिन्दगी, परवशता, अंध आज्ञाकारिता और परनिर्भरता की बेड़ियों में जकड़ी रहें।

भारत में बालिकाओं को खास तरह से कठिन जीवन का सामना करना पड़ता है। गर्भ धारण से लेकर जन्म तक आरम्भिक बाल्यकाल से लेकर स्कूली जीवन तक, किशोरावस्था, स्त्रीत्व और वृद्धावस्था तक वह कभी भी विजयी न हो पाने वाली स्थिति में बंधी रहती है। भारत की आबादी दुनियाँ की जनसंख्या का सातवाँ (121.02 करोड़) हिस्सा है। उनमें 48.46 प्रतिशत महिलायें हैं और महिलाओं की कुल जनसंख्या की लगभग आधी 20 वर्ष की उम्र से नीचे की हैं। उपलब्ध आंकडों के अनुसार भारत में करीब 1.20 करोड़ लड़कियों का प्रति वर्ष जन्म होता है। इनमें से लगभग 15 लाख अपना पहला जन्म दिन देखने के लिए जीवित नहीं रह पातीं और 5 वर्ष के भीतर 35 लाख अकाल मृत्यु हो जाती है। 15 वें वर्ष तक पहुंचते–पहुंचते उनमें से केवल 90 लाख ही जीवित रह पाती हैं। यह सर्द कर देने वाले आंकड़े भारत में बालिकाओं के जीवित रहने की सम्भावनाओं के बारे में पर्याप्त जानकारी दे देते हैं।

भारतीय सामाज यह मांग करता है कि बालिका यथा शीघ्र बड़ी हो जाये। उसका दुनियाँ में विवाह के जरिये सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से उखड़ना और पुनः अपने को स्थापित करने का कष्टप्रद अनुभव शामिल है। उसे बहुत थोड़ा समर्थन मिल पाता है। जैसी कि व्यवस्था है, उसे इसका अनुभव स्वयं करना होता है। एकमात्र दिशा निर्देश जो उसे प्राप्त होता है, वह यह कि बार–बार उसे याद दिलाया जाता है कि सामाजिक परम्पराओं द्वारा निर्धारित अपेक्षाओं पर उसे खरा उतरना है। बालिकाओं की समस्यायें अपने आप में ही स्वास्थ्य रक्षा से लेकर शिक्षा और पोषण जैसे बहुत से मामलों में कई–कई परतों वाली और आयामी है।

सबसे पहले बालिकाओं का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपने को उपेक्षित महसूस करता है। लडकों को दिये जा रहे विशेष महत्व की पहचान उन्हे पहले ही हो जाती है। बहुत छोटी बच्ची के रूप में ही उसका सामना पुत्र उत्सव तथा पुत्री के जन्म पर छा जाने वाली उदासी से हो जाता है। परिवार से बाहर के लोगों के द्वारा भी बेटा होने की अकांक्षा खुलेआम व्यक्त की जाती है। वह जल्दी ही समझ जाती है कि स्त्री के रूप में जन्म लेना एक दुर्भाग्य है।

विभिन्न यज्ञों और धर्माचार्यों में व्यक्त भारतीय परिवार की पुत्र प्राप्ति के प्रति सनक लिंग भेद को और विस्तृत ही करती है। यह निश्चित रूप से विडम्बना ही कही जायेगी कि लड़के के लिए, पुरूषों के मुकाबले स्त्रियाँ ही लालायित रहती हैं। दुर्भाग्यवश लड़की को जन्म देने का आरोप भी उसी पर लगता है। हालांकि विज्ञान ने स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित कर दिया है कि शिशु का लिंग निर्धारण पुरूष सुक्राणु (क्रोमोसोम) द्वारा होता है।

द्वितीयतः बालिकाओं की स्वास्थ्य रक्षा और दुग्धपान में भेदभाव जन्म के तत्काल बाद ही शुरू हो जाता है। लड़कों की तुलना में बालिकाओं को कम समय के लिये स्तनपान कराया जाता है। यह उसके पूरे जीवनकाल में लागू रहता है, जिससे वे कुपोषण की शिकार हो जाती हैं। **राष्ट्रीय निरीक्षण व्यूरो** के आहार खपत

आकड़ों के अनुसार 13 वर्ष से 15 वर्ष के आयु वर्ग में लड़कियाँ निर्धारित कैलोरी की दो तिहाई से भी कम मात्रा अपने भोजन में लेती हैं, जिसके कारण वे अपने पूरे कद और वजन तक नहीं पहुंच पातीं। इसके अतिरिक्त बहुत सी अबोध लड़कियाँ बौद्धिक रूप से अविकसित रह जाती हैं, क्योंकि उन्हें स्कूल जाने के अवसर से वंचित कर दिया जाता है।

प्राथमिक विद्यालय के स्तर पर नामांकन का लडकों का अनुपात, लड़कियों की तुलना से बहुत ज्यादा है। अनुमान है कि प्राथमिक विद्यालय के स्तर पर यह 55.5 प्रतिशत और माध्यमिक विद्यालय के स्तर पर 77.7 प्रतिशत है। ऐसा इसलिए है क्योंकि लड़कियाँ बहुत छोटी उम्र में घरेलू काम–काज में अपनी माताओं का हाथ बँटाने लगती हैं। उपलब्ध आकड़ों के अनुसार 1975 और 1985 के बीच उच्च शिक्षा के लिए लड़कियों का नामांकन एक जैसा बना रहा है। इन सबको ध्यान में रखते हुए यह आश्चर्य जनक नहीं लगता कि भारत में महिला शिक्षा की दर बहुत नीचे है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है, अर्थात् 121.02 करोड़ की कुल आबादी में केवल 65.46 प्रतिशत महिलायें ही साक्षर हैं। अलग–अलग राज्यों में महिला साक्षरता का प्रतिशत अलग–अलग है। केरल में यह जहाँ सर्वाधित 91.98 प्रतिशत है, वहीं राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में न्यूनतम 52.66 प्रतिशत है। वर्ष 2011 में महिलाओं की कुल साक्षरता का अनुपात पुरूषों के प्रतिशत के मुकाबले केवल 16.68 प्रतिशत दर्ज किया गया। ठोस संदर्भों में निरक्षर महिलाओं की संख्या निरक्षर पुरूषों के दर के मुकाबले समय के साथ तीव्र गति बढ़ती ही जा रही है।

बेहद दुःखद पक्ष यह है कि भारत में बालिकायें केवल अनापेक्षित ही नहीं हैं बल्कि अपने ही परिवार पर एक बोझ मानी जाती हैं। युवावस्था की ओर पाँव रखते ही वह यौन के स्तर पर असुरक्षित हो जाती हैं और उसके लिए सुरक्षा की जरूरत

पड़ती है। चूँकि बोझ को जितनी जल्दी सम्भव हो उतनी जल्दी दूसरे पर डाल दिया जाना होता है, इसलिए उसके विवाह को प्राथमिकता दी जाने लगती है। फलस्वरूप कम उम्र में विवाह का होना हासिल होता है। कम उम्र में गर्भ धारण जिसका परिणाम यह होता है कि माताओं की मृत्यु दर बहुत ही बढ़ जाती है। इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में कम वजन वाले शिशुओं की बालमृत्यु, विकलांग बच्चे, स्त्री रोग जैसी समस्याओं के खतरे भी बढ़ जाते हैं। यह दुःख, अज्ञान, गरीबी और पूर्वाग्रह के चक्र को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बेहद स्पष्ट निरन्तरता के साथ चिर स्थायी बना देता है।

भारत को संदेहात्मक विशिष्टता प्राप्त है कि यह विश्व का अकेला ऐसा देश है कि जहाँ पुरूषों के मुकाबले स्त्रियों का अनुपात कम रहा है और जहाँ पुरूषों के मुकाबले स्त्रियों की आयु सम्भवतः नीचे है। सन् 1901 में प्रति हजार पुरूषों पर 972 महिलायें थीं। 1931 में 950, 1961 में 933 और 2011 में मात्र 914 रह गयीं।

सब कुछ कहने और करने के साथ आज भारत में लड़कियों के प्रति जागरूकता बढ़ी है और उनकी दशा सुधारने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं। लड़कियों के अस्तित्व और सम्पूर्ण विकास के प्रति बढ़ती चिन्ता की परिणति के रूप में सार्क देशों ने वर्ष 1990 को **सार्क बालिक वर्ष** के रूप में मनाने का निर्णय लिया। 1990 में बालिकाओं की समस्याओं के प्रति उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाओं के मद्दे नजर **माले** में हुई बैठक में सार्क देशों के शासनाध्यक्षों और राष्ट्राध्यक्षों ने 1990 के दशक को **सार्क दशके** के रूप में मनाये जाने की घोषणा की यह इस क्षेत्र में बालिका वर्ष के दौरान शुरू किये गये क्रियाकलापों के प्रति उत्साह और गति को बनाये रखने के लिए सतर्क प्रयास था। इस सम्बन्ध में भारत सरकार ने सार्क बालिका दशक 1990 से 2000 के लिए एक **राष्ट्रीय कार्य योजना** तैयार की। 1990 के दशक में बच्चों के अस्तित्व संरक्षण एवं विकास पर विश्व घोषणा तथा

सार्क राष्ट्रों की **माले घोषणा** के अनुरूप भारत में भी इस दशक में बालिकाओं के लिए लिंग आधारित लक्ष्य निर्धारित किये गये।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि बालिका समुदाय समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तबका है। जिसकी हाल–फिलहाल तक गर्भ से लेकर चिता तक उपेक्षा की जाती रही है। निकट अतीत में विश्व भर में आये बदलाव खासकर सार्क देशों में हुआ। विकास अंधेरे में उम्मीद की एक किरण लेकर आया है। बालिकाओं को अपना आत्मबल बनाने, परिवार और समाज में अपने योगदान बढ़ाने, विद्यालय में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करने, टीकाकरण और स्वास्थ्य के लिए तथा रोजगार के लिए अपनी व्यवसायिक योग्यता में विकास के लिए सहायता और प्रोत्साहन की जरूरत है। हम में से प्रत्येक के लिए अनिवार्य है कि वह बालिकाओं की दशा सुधारने के लिए किये जा रहे भारत सरकार के ठोस प्रयासों में हाथ बँटाये ताकि उनकी लडकों के समक्ष पहचान और मूल्यांकन हो सके। इसके लिए जरूरी है कि परिवार, समाज, राज्य और स्वैच्छिक क्षेत्र में इसके साझीदार बालिकाओं के प्रति वास्तविक दिलचस्पी लें और प्राथमिकता के आधार पर काम करें। स्त्री शिक्षा का कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक लागू किया जाये। केवल तभी यह उदात्त लक्ष्य सफल हो पायेगा।

स्त्री शिक्षा का महत्व :

शिक्षित नारी परिवार व समाज की शोभा है। **'मनु'** ने कहा है– **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"** अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। स्त्री देश की संस्कृति, धर्म, साहित्य, ज्ञान, विज्ञान तथा कला का स्तम्भ होती है। नारी विभिन्न रूपों में राष्ट्र तथा समाज की सेवा करती है। स्त्री शिक्षा के ऊपर ही समाज तथा राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है।

स्त्री शिक्षा का समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। स्त्री शिक्षा का महत्व परिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी रूपों में मिलता है। हम देखेंगे कि परिवार निर्माण, विकास, सुरक्षा, संस्कृति सभी में स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान है। एक शिक्षित माता मनोविज्ञान के आधार पर शैशवावस्था, बालावस्था, किशोरवस्था आदि से पूर्ण परिचित होने के कारण बालक का पालन सुन्दर ढंग से कर सकती है। शिक्षित माता जान सकती है कि उसके बालक की प्रवृत्ति रूचि तथा दक्षता किस प्रकार की है व आर्थिक स्थिति के आधार पर बालक को अच्छा नागरिक बनाने में मार्गदर्शक का कार्य करती है।

परिवार के साथ–साथ समाज निर्माण में भी स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है, समाज एक द्विध्रुवीय प्रक्रिया है जिसका एक ध्रुव स्त्री है और दूसरा ध्रुव पुरूष है, तो यह असंगत तथा अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा। समाज निर्माण, समाज के उत्थान व पतन में स्त्रियों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। यदि स्त्रियाँ शिक्षित हैं तो अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह भली–भाँति कर सकती हैं। नारी समाज की शक्ति है, जिसके द्वारा मनुष्य प्रेम, दया त्याग सहानुभूति आदि का पाठ सीखता है। नारी के इन्हीं गुणों के कारण समाज में सदैव आदरणीय व प्रतिष्ठित रहती है। स्त्री को शिक्षित करके समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है व समाज का आदर्शोंमुखी विकास किया जा सकता है।

राजनैतिक दृष्टि से यदि हम स्त्री शिक्षा पर विचार करें तो जनतंत्र की सफलता, मतदान, का न्यायोचित उपयोग, राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान होने के कारण स्त्रियों का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। राजनैतिक स्थायित्व तथा सुसंगठित राष्ट्र का निर्माण एवं प्रजातंत्र की सफलता स्त्री शिक्षा के ऊपर ही निर्भर करती है। स्त्री शिक्षा की आवश्यकता पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनैतिक सभी दिशाओं में महत्वपूर्ण है। स्त्रियों का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है जब वह पूर्ण शिक्षित होगी। शिक्षा उसे सभ्य, सुसंस्कृत व सुयोग्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा

उसमें विवेक का संचार होता है। मानव मस्तिष्क में चिन्तन प्रक्रिया गहन होती जाती है, जबकि उसके समक्ष कोई कठिनाई आती है और यही कठिनाई मानव मस्तिष्क में तरह–तरह की समस्यायें उत्पन्न करती है। जिन्हें हल करने के लिये करने के लिये व्यक्ति अनेकानेक भाँति विचार मन्थन करता है। वर्तमान समय में बालिकाओं की शिक्षा को महत्व दिया जा रहा है। बालिकाओं को अपनी शैक्षिक क्रियाओं को पूर्ण करने में बालकों की अपेक्षा अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। छात्रायें ग्रामीण हो अथवा नगरीय सभी के समक्ष समस्यायें मुँह किये खड़ी हैं।

2. समस्या चयन के कारण :

भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है, जिसका मूल कारण कृषि एवं कुटीर उद्योग धंधे हैं। इन धंधों में लगे हुये अधिकतर व्यक्ति अशिक्षित हैं। जो बालिकाओं की शिक्षा के प्रति पूर्णतया उदासीन हैं। अधिकांश बालिकायें शिक्षा प्राप्त करना चाहती हैं व इस योग्य हैं। परन्तु पुराने रीति रिवाजों व पुरानी रूढ़ियों से ग्रस्त होने के कारण ग्रामीण अभिभावक उनको शिक्षित करने से कतराते हैं तथा गतिरोध उत्पन्न करते हैं।

शहरों में उच्च वर्ग में स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन मिला। अभिभावक जागरूक हैं, वे लड़कियों का स्नातक होना आवश्यक समझते हैं, परन्तु सारी समस्यायें मध्यम वर्गीय परिवारों की होती हैं। मध्यम वर्ग में जीवन यापन के कुछ मानक होते हैं, जिसे उन्हें कायम करना होता है। वह उच्च स्तर को प्राप्त करने की आकांक्षा रखती हैं, सामान्य रूप से उसमें योग्यता व क्षमता होती है। परन्तु आर्थिक उपलब्धि न होने के कारण वह इच्छानुसार उस स्तर तक नहीं पहुँच सकती है, जिससे संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। बालिकायें उच्च वर्ग की ही भांति उच्च शिक्षा प्राप्त

करना चाहती हैं पर उनकी आर्थिक स्थिति इस हेतु आदेश नहीं देती और उन्हें अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

छात्रायें ग्रामीण हों अथवा नगरीय, उच्च, मध्यम अथवा निम्न किसी भी वर्ग से सम्बन्धित हों, उन्हें अपनी शैक्षिक उपलब्धियों को पूर्ण करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि अभिभावक नगरीय हो अथवा ग्रामीण, भारतीय परम्परानुसार लगभग सभी में संस्कार एक ही प्रकार के हैं। गांवों की सभ्यता में उतना खुलापन नहीं है जितना शहरी सभ्यता में। समानता के साथ विभिन्नता का पाया जाना ही इस समस्या को जन्म देता है कि भारतीय परिवेश के ग्रामीण व नगरीय अभिभावक येन–केन प्राकरेण यदि अपनी दुहिताओं को शिक्षित करने का प्रयास करते हैं तो यह जानना आवश्यक हो जाता है कि क्या ग्रामीण व नगरीय छात्राओं की समस्यायें अलग–अलग या एक ही प्रकार की है? तथा ग्रामीण व नगरीय छात्राओं की समस्यायें किस प्रकार की है?

3. समस्या कथन :

"माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक कठिनाइयों का तुलनात्मक अध्ययन।"

4. समस्या का परिभाषीकरण :

मानव समाज अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये अनेक साधनों को अपनाता है। यदि आवश्यकता की संतुष्टि किसी उपलब्ध साधन द्वारा नहीं हो पाती है तो एक समस्या उत्पन्न हो जाती है।

"एक (समाधान योग्य) समस्या ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर व्यक्ति की सामान्य क्षमताओं के प्रयोग से दिया जा सकता है।" (अनुसंधान परिचय– डॉ0 पारसनाथ राय पेज नं0 41)

चूँकि अनुसंधान के लिये समस्या का चुनाव एवं कथन के पश्चात सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य समस्या का परिभाषीकरण है। इस विषय में **डब्ल्यू0एस0 मुनरो** का कथन महत्वपूर्ण है :–

"To define of problem means to specify it in detail and with precision each question and subordinate question to be answered is to be specified. The limits of the investigation must be determind frequently it is necessary to review precious studies in orde to determine just what to be done some times it is necessary to formulate the point of view of it educational theory on which the investigation is based cerstain assumptions are made they must be explicily noted"

(Mon Roe, W.S. the teehiques of educational reseasch. Page no-14, 1928)

स्त्री शिक्षा की समस्याओं पर आधारित लघुशोध कार्य भी किये गये है। स्त्री शिक्षा की समस्याओं पर आधारित लघु शोध कार्य शोधकर्ता द्वारा चुना गया है। स्त्री शिक्षा भी चार स्तरों में विभाजित है :–

1. प्राथमिक स्तर
2. माध्यमिक स्तर
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर
4. विश्वविद्यालय स्तर

ग्रामीण छात्रायें : ग्रामीण छात्राओं से हमारा तात्पर्य शहरों से दूर ग्रामों में रहने वाली कृषकों, मजदूर वर्ग की छात्राओं से है।

शहरी छात्रायें : नगरीय (शहरी) छात्राओं से हमारा तात्पर्य कस्बों, नगरपालिकाओं तथा नगर निगमों में रहने वाली छात्राओं से है।

माध्यमिक कक्षायें : माध्यमिक कक्षाओं से हमारा तात्पर्य कक्षा 6 से 10 तक (हाईस्कूल) की कक्षाओं से है। इस स्तर पर पढ़ने वाली बालिकाओं का अध्ययन है।

कक्षाओं की समस्या : कक्षाओं की समस्याओं से तात्पर्य कक्षा में आने से लेकर जाने तक की जो भी समस्यायें छात्राओं को उठानी पड़ती है।

तुलनात्मक अध्ययन : ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की कक्षाओं की समस्याओं से प्रभावित छात्राओं की उपस्थिति तथा समस्याओं से प्रभावित उनके परीक्षाफल के बीच पाये जाने वाले अन्तर से है।

5. प्रस्तुत शोध के उद्देश्य :

- **छात्राओं की कक्षाओं को विषयपरक् बनाना :** छात्राओं की कक्षाओं को उनकी रूचियों के अनुसार विषयपरक बनाना ही समस्या का उद्देश्य है। छात्राओं के विषय बालकों के विषयों के साथ–साथ छात्राओं के अनुकूल भी होने चाहिये। छात्राओं की कक्षाओं में विषय से आशय गृहविज्ञान, विज्ञान, व्यवसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा आदि से है।

- **ग्रामीण बालिकाओं को उच्च शिक्षित करना :** शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तरह ग्रामीण बालिकाओं (छात्राओं) को भी उच्च शिक्षित किया जाये। ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं के लिये अधिक से अधिक माध्यमिक स्तर के विद्यालय तथा उच्च स्तर के विद्यालय खोलने के लिये प्रयास करना चाहिये।

- **स्त्रियोचित एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करना :** हमें स्वतंत्र भारत में स्त्री जाति को अबला से सबला बनाने के लिये इसका शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास करने के लिये उपयोगी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिये। स्त्रीयोचित खेलकूद, व्यायाम, आसनों की व्यवस्था की जानी चाहिये। मानसिक शक्तियों का विकास करने के विषयों का शिक्षण कार्य किया जाना

चाहिये। यह आवश्यक है कि उपर्युक्त शिक्षा का प्रबन्ध महिला विद्यालयों में ही सम्भव है।

- **स्त्रीत्व को बनाये रखने की शिक्षा और वातावरण की व्यवस्था करना :** स्त्री का स्त्रीत्व उसकी लज्जाशीलता, कौमार्य एवं विनम्रता उसकी निर्भीकता में सन्निहित होता है। यह सभी तभी सम्भव है जव उन्हें स्त्रीयोचित से परिचित कराया जाये तथा पूर्ण रूप से शिक्षित हों। भारतीय संस्कृति में स्त्रियों की स्थिति महत्वपूर्ण रही है। वह माता है, पत्नी है, बहन है, पुत्री है तथा उसके अपने–अपने स्थान पर क्या कर्तव्य एवं अधिकार हैं, यह शिक्षित स्त्री ही समझ सकती हैं।

- **स्त्री को धार्मिकता, नैतिकता, चरित्र निर्माण और शान्ति स्थापना का स्रोत बनाना :** स्त्री ही एक ऐसी शक्ति है जो धार्मिक भावनाओं का प्रसार करके बालकों का नैतिक आचरण सुधारती है और अशांत वातावरण में शान्ति के बीज अंकुरित करती है। वह दया की देवी होती है। क्षमा शीलता उसका धर्म होता है। वह सहिष्णु, उदार व कर्मठ होती है। यह गुण एक योग्य नागरिक में होने आवश्यक हैं। स्त्री बालक में इन गुणों का विकास करती है। संसार में नैतिकता का पतन और उत्थान स्त्री के कारण ही हुआ है। शिक्षा प्राप्त करके स्त्री में नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक गुण आ जाते हैं।

- **स्त्री को संस्कृति प्रसार का स्रोत बनाना :** विविध सांस्कृतिक परम्परायें समाज में स्त्रियों द्वारा ही संस्थापित होती हैं। वह उसकी रक्षक, पोषक और प्रसारक है। वह परिवार से लेकर समाज के क्षेत्र में अपने व्यवहारों द्वारा संस्कृति का विकास करने में योगदान देती है। वस्त्र–विन्यास, रहन–सहन, धार्मिक प्रथायें, रीति–रिवाज, मान्यतायें, मातृभाषा विकास, परिवारिक शिक्षा द्वारा सामाजीकरण के आदर्श प्रस्तुत

करके पुरूष वर्ग का वही मार्गदर्शन करती है। इसलिये स्त्री शिक्षा में भारतीय संस्कृति का समन्वय करना चाहिये। जिसमें वह उस संस्कृति का प्रसार करने का उत्तरदायित्व निर्वाह कर सके।

➢ **स्त्री वर्ग को व्यवसायिक, जीविकोपार्जन एवं कला में दक्ष बनाना :** यदि किसी परिवार के कर्तव्यों के निर्वाह की पूर्ति करने के उपरान्त स्त्री के पास समय बचता है तो वह उसका सदुपयोग व्यवसायिक एवं जीविकोपार्जन कार्य में कर सकती है। वर्तमान युग में स्त्री वर्ग को रोजगार के अनेक साधन उपलब्ध हैं। राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार द्वारा अनेक क्षेत्र की नौकरियों में स्त्री वर्ग को 33 प्रतिशत का आरक्षण अनिवार्य कर दिया गया है।

➢ **प्रजातंत्र की सुरक्षा का प्रसार करना :** स्त्री बालक के शिक्षण एवं प्रशिक्षण की सबसे पहली सीढ़ी होती है। स्त्रियां ही बालकों को प्रजातंत्र के सिद्धान्तों की रक्षा करने की शिक्षा देती हैं। इसलिये स्त्री शिक्षा पाठ्यक्रम में पुरूषों के समान नागरिकता की शिक्षा और प्रजातंत्र के सिद्धान्तों की जानकारी का समावेश होना चाहिये।

➢ **नेतृत्व और उत्तरदायित्व का विकास करना :** ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं की शिक्षा में सुधार किया जाना चाहिये। ग्रामीण परिवेश की बालिकायें अधिक से अधिक उच्च शिक्षित हों, हमारी सरकार को ऐसा प्रयास करना चाहिये। क्योंकि प्राचीन युग से ही स्त्रियों ने मार्गदर्शन और नेतृत्व किया, जैसे लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, एनीबेसेन्ट, कमला नेहरू, कस्तूरबा गाँधी, इन्दिरा गाँधी आदि। आज भी भारत को ऐसी महिला नेताओं की आवश्यकता है और यह तभी सम्भव है, जब समाज में सम्पूर्ण स्त्री शिक्षा अनिवार्य रूप से दिलाने के प्रयास सरकार द्वारा किये जायें। आधुनिक छात्राओं को पुरूषों के समान विकास की

सुविधायें और अवसर देकर प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व का शिक्षण देना चाहिये। स्त्री शिक्षा यदि ग्रामीण क्षेत्रों में भी उच्च शिक्षा के रूप में विकसित हो तो ग्रामीण स्त्रियां भी योग्य चिकित्सक, योग्य अभियंता योग्य अध्यापिका तथा समाज सुधारक बनकर राष्ट्र की सेवा कर सकें तो राष्ट्र का बहुत बड़ा उपकार होगा।

6. समस्या का सीमांकन :

प्रस्तुत लघु शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा **"माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक कठिनाइयों का तुलनात्मक अध्ययन"** पर लघु शोध कार्य करना है। समय व साधनों के अभाव के कारण शोधकर्त्री के लिये विशाल ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की बालिकाओं की शैक्षिक कठिनाइयों का तुलनात्मक अध्ययन करना एक कठिन कार्य था। अतः शोधकर्ती ने अपने अध्ययन को निम्न सीमाओं के अन्तर्गत रखा है।

- शोधकर्त्री ने जिला बाँदा के दो ग्रामीण विद्यालय तथा दो शहरी विद्यालयों की छात्राओं को अध्ययन के लिये चुना है।
- इसमें केवल छात्राओं का ही चयन किया गया है, छात्रों का नहीं अर्थात् अध्ययन केवल छात्राओं की समस्याओं का ही किया गया है।
- अध्ययन हेतु हाईस्कूल स्तर की छात्राओं का चयन किया गया है।
- अध्ययन में प्रदत्त संकलन के लिये केवल प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

7. समस्या की आवश्यकता :

हमारे देश की स्त्री शिक्षा संसार के अन्य देशों की अपेक्षा अत्यन्त प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। विकासशील देशों में स्त्रियों को पुरूषों के साथ परिवारिक, सामाजिक,

आर्थिक जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ता है। अतः स्त्री शिक्षा की अवहेलना नहीं की जा सकती।

उपर्युक्त समस्या की आवश्यकता शोधकर्त्री द्वारा ग्रामीण बालिकाओं की धीमी प्रगति के कारण चुनी गयी। स्त्री शिक्षा के विकास के लिये भारत देश की केन्द्रीय एवं राजकीय सरकारें निरन्तर प्रयास करती हैं। लेकिन जो भी योजनायें सरकार बनाती है और उसे लागू करती है, वह केवल शहरों और कस्बों तक ही सीमित रहती है। ग्रामीण क्षेत्रों में योजनाओं का प्रभाव नहीं पड़ता, जिससे ग्रामीण छात्रायें अशिक्षित या उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती हैं।

इस लघु शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा जो समस्या चुनी गई है, उसके अन्तर्गत छात्राओं को बहुत समस्यायें आती हैं। जिनको प्रस्तुत करना समय के अभाव के कारण शोधकर्त्री के लिये एक बड़ी समस्या है। इस समस्या के अन्तर्गत छात्राओं की कुछ प्रमुख समस्याओं को शोधकर्त्री द्वारा चुना गया है और उन्हीं पर यह लघु शोध कार्य करना है। यह समस्यायें निम्नलिखित है :–

1. **भवन सम्बन्धित समस्यायें** : भवन से सम्बन्धित समस्याओं से आशय है, विद्यालय का भवन निजी है अथवा किसी किराये का भवन है। विद्यालय में सभी कक्षायें अलग–अलग कमरों में लगती हैं। विद्यालय में प्रार्थना स्थल व खेलकूद का मैदान आदि समस्याओं का अध्ययन है।

2. **आवागमन से सम्बन्धित समस्यायें** : ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों की छात्राओं के आवागमन के क्या साधन हैं? उनका विद्यालय घर से कितनी दूर पड़ता है? उन्हें आने–जाने में क्या कठिनाइयां हैं? आदि समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

3. **पारिवारिक एवं आर्थिक समस्यायें** : छात्राओं की पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति क्या है? परिवारिक एवं आर्थिक स्थिति का छात्राओं के जीवन पर

क्या असर पड़ता है? आदि पारिवारिक समस्यायें हैं, जिनको इस समस्या के अर्न्तगत लिया गया है।

4. **सह–शिक्षा सम्बन्धित समस्यायें** : ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में कई ऐसे विद्यालय हैं, जहां बालक–बालिकाओं को सह–शिक्षा के रूप में शिक्षा दी जाती है। सह–शिक्षा में छात्राओं को क्या असुविधा है तथा इसका उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन इस समस्या के अर्न्तगत किया गया है। माध्यमिक कक्षाओं में छात्राओं को छात्रों के साथ पढ़ने में क्या असुरक्षा है। इन सभी का अध्ययन किया गया है।

5. **विषय–कक्ष सम्बन्धित समस्यायें** : विद्यालय में विषयों से सम्बन्धित सभी कक्षायें जैसे–गृह विज्ञान, विज्ञान, व्यवसायिक शिक्षा आदि की सुविधायें विद्यालय में हैं? इन सभी विषयों के लिए अलग कक्ष है? आदि समस्याओं का अध्ययन इस समस्या के अर्न्तगत किया गया है।

6. **उपस्थिति सम्बन्धित समस्यायें** : विद्यालय में छात्राओं की उपस्थिति सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया गया है। छात्राओं की उपस्थिति विद्यालय में क्या है? उपस्थिति पर अभिभावक व अध्यापिकायें ध्यान देती हैं? ग्रामीण व शहरी छात्राओं की उपस्थिति का अन्तर क्या है? आदि का अध्ययन इस समस्या के अन्तर्गत किया गया है।

7. **पुस्तकालय सम्बन्धित समस्यायें** : विद्यालय में पुस्तकालय (वाचनालय) है, इसकी उपयोगिता क्या है? पुस्तकालय में छात्राओं की ज्ञान वृद्धि के लिए पुस्तकें रहती हैं? छात्राओं को विषय सम्बन्धित पुस्तकें विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध करायी जाती हैं? पुस्तकालय में छात्राओं के बैठने के लिए स्थान व फर्नीचर की व्यवस्था है? पुस्तकालय में दैनिक, साप्ताहिक व मासिक समाचार पत्र तथा पत्रिकायें छात्राओं को पढ़ने के लिए मिलती हैं? आदि समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

8. **सांस्कृतिक कार्यक्रम व खेलकूद सम्बन्धित समस्यायें** : विद्यालय प्रशासन छात्राओं के लिए खेलकूद सम्बन्धी सभी सुविधायें उपलब्ध कराते हैं? सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए अलग कक्ष की व्यवस्था विद्यालय में है? सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षित अध्यापिकायें/अध्यापक हैं? सांस्कृतिक कार्यक्रम व छात्राओं के लिए खेलकूद प्रतियोगिता वार्षिक रूप से आयोजित की जाती है? आदि कार्यों का अध्ययन इस समस्या के अन्तर्गत किया जाता है।

9. **शिक्षण कार्य सम्बन्धित समस्यायें** : विद्यालय में सभी विषय की कक्षायें समयानुसार लगती हैं? क्या सभी विषयों के अध्यापक प्रशिक्षित तथा उच्च शिक्षित हैं? सभी विषयों के लिए अलग–अलग शिक्षण कार्य किया जाता है? सभी विषयों के अध्यापक समयानुसार अध्ययन कार्य करते हैं? आदि समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

10. **नैतिक शिक्षा, छात्रा–निर्देशन, दैनिक निवृत्ति कार्य व पेयजल की समस्या** : विद्यालय में नैतिक शिक्षा कक्ष की व्यवस्था है? नैतिक शिक्षा विषय को रूचिकर ढंग से पढ़ाया जाता है? छात्राओं की समस्याओं पर अध्यापक/अध्यापिकायें ध्यान देते हैं? दैनिक निवृत्ति के साधन विद्यालय में उपलब्ध हैं? विद्यालय में पेयजल व कैन्टीन की सुविधा छात्राओं को उपलब्ध करायी गयी है? आदि समस्याओं का अध्ययन इस समस्या के अर्न्तगत किया गया है।

8. प्रस्तुत समस्या में छात्राओं की शिक्षा का महत्व :

भारत देश की स्त्री शिक्षा अत्यन्त प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। स्त्री परिवार एवं समाज का आधार है। उन्हें शिक्षित करना समाज को शिक्षित करना है।

प्रतिरक्षा मंत्री **स्व0 जगजीवन राम** ने कहा है– "एक कन्या को पढ़ा देने से आगे आने वाली पीढ़ी सुशिक्षित होगी" अतः स्त्री शिक्षा का समुचित विकास करना राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता है। देश और समाज की प्रगति के लिए उन्हें समुचित शिक्षा देना अनिवार्य है।

महान सेना नायक **नेपोलियन** का कथन है– "बालक का भावी भविष्य माता द्वारा निर्मित किया जाता है।" **राष्ट्रपति लिंकन** का कथन है– "मैं जो कुछ भी हूँ और जो कुछ होने की आशा करता हूँ, इसके लिए अपनी माता का कृतज्ञ हूँ।" शिक्षित नारी ही अपने परिवार, समाज तथा देश के गौरव को ऊँचा उठाती है। अतः देश की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर उसकी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।

स्त्री शिक्षा के महत्व निम्नलिखित हैं :–

1. **बालिकाओं का शैक्षिक विकास :** छात्राओं की कक्षाओं की समस्याओं को, ग्रामीण एवं शहरी स्तर के विद्यालयों की छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन करके यह ज्ञात किया जा सकता है कि ग्रामीण छात्राओं के शैक्षिक विकास के लिए क्या–क्या सुधार किये जायें? शहरी व ग्रामीण छात्राओं के बीच शिक्षा की क्या समस्यायें हैं, जिससे शहरी छात्राओं की तरह ग्रामीण छात्राओं की प्रगति में सुधारात्मक प्रयास किये जायें। ग्रामीण बालिकाओं को माध्यमिक स्तर की शिक्षा सुविधायें उपलब्ध कराके ग्रामीण बालिकाओं की, माध्यमिक स्तर की शिक्षा में होने वाली कठिनाइयों को दूर किया जाये, जिससे ग्रामीण छात्रायें उच्च शिक्षित हों। ग्रामीण बालिकाओं के लिए सरकार द्वारा अधिक से अधिक माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ग्रामीण क्षेत्रों में खोलने के प्रयास किये जायें। ग्रामीण बालिकायें ही स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ी हैं। अतः इन ग्रामीण छात्राओं के विकास के लिए सरकार कदम उठाये।

2. **सामाजिक एवं पारिवारिक दृष्टि से महत्व :** छात्राओं की कक्षाओं की समस्याओं में सुधार करके छात्राओं के पाठ्यक्रम में सुधार किया जाये, जिससे स्त्री शिक्षा को विकास की ओर ले जाया जा सके। स्त्री शिक्षित होगी, तो समाज भी शिक्षित होगा। ग्रामीण क्षेत्रों की स्त्रियाँ शिक्षित नहीं हैं, जिससे ग्रामीण स्त्रियाँ आज भी अंधविश्वास का शिकार होती हैं। समाज एवं परिवार को चलाने में स्त्रियों का स्थान सर्वोपरि है। अतः स्त्रियों के लिए शिक्षा की ऐसी रूपरेखा बनायी जाये जो उनके जीवन को सफल बनाने में सहायक हो। यदि समाज का नव–निर्माण करना है, तो ग्रामीण स्त्रियों को भी शहरी स्त्रियों की भांति शिक्षित किया जाये, तथा राष्ट्र का पूर्ण निर्माण होगा।

3. **व्यवसायिक दृष्टि से महत्व :** हमारे देश की ग्रामीण बालिकायें भी शहरी बालिकाओं की तरह अपने स्वयं के व्यवसाय व रोजगार चुन सकती हैं। जब ग्रामीण छात्रायें उच्च शिक्षित होंगी तो उनको भी सरकारी नौकरी और व्यवसाय के अनेक अवसर प्राप्त होंगे जिससे वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करने में बराबर साथ देंगी। लड़के व लड़की में माँ–बाप की जो धारणायें हैं वह दूर हो जायेंगी। ग्रामीण छात्राओं की कक्षाओं की समस्यायें दूर करके उनकी रूचि उच्च शिक्षा की ओर बढ़ायी जा सकती है। ग्रामीण बालिकाओं में आत्मनिर्भर होने की क्षमता को बढ़ावा दिया जा सकता है। शहरों की तरह सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के विद्यालय खोलने के ठोस कदम उठाने चाहिए।

4. **राजनैतिक दृष्टि से महत्व :** राष्ट्र की उन्नति के लिए स्त्री शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना आवश्यक है। स्वतंत्र भारत में स्त्रियों को पुरूषों के समान सभी अधिकार प्राप्त हैं। राष्ट्र को उन्नत और सफल बनाने के लिए स्त्रियों पर उतना ही दायित्व है जितना पुरूषों पर। प्रजातंत्र की सफलता शिक्षित स्त्रियों पर ही निर्भर है। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का ज्ञान शिक्षा द्वारा ही

सम्भव है। अतः स्त्रियों को शिक्षित करना देश को प्रगति पर ले जाना है। आज भारत के राजनैतिक क्षेत्र में जो स्त्रियाँ महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। वह सर्वविदित है। राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करने वाली स्त्रियाँ न केवल भारत में ही, वरन् पूर्ण विश्व में सम्मान प्राप्त कर रही हैं। स्त्री शिक्षा ग्रामीण क्षेत्रों व शहरों में अनिवार्य रूप से दी जाये, ऐसा प्रयास सरकार तथा मानव समाज को करना चाहिए। जिससे शहरों की तरह ग्रामीण छात्रायें भी डॉक्टर, इंजीनियर, अधिवक्ता, राजनीतिज्ञ और सरकारी कर्मचारी आदि रोजगारपरक् अवसर प्राप्त कर सकें।

अध्याय द्वितीय

1. सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा :

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध प्रबन्ध एवं अभिलेख आदि से है जिनके अध्ययन से शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन, उपकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अन्धे के तीर के समान होगा। इसके अभाव में सही दिशा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक उसे पता न हो कि उस क्षेत्र मे कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से काम किया गया है? एवं इसके निष्कर्ष क्या आये हैं? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है।

गुड बार एवं स्केट्स के अनुसार – "एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु हाल अनुसंधान के क्षेत्रों में कार्य करने वाले एवं अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।"

डब्ल्यू0 आर0 बोर्ग– "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधार शिला के समान है, जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा उसकी नींव को नही लेते हैं तो हमारा कार्य प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है, अन्यथा यह पुनरावृत्ति भी हो सकती है।"

वोस्ट के अनुसार– "व्यवहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जाता है।" अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में

नये सिरे से प्रारंभ करता है। मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संगृहीत एवं सुरक्षित रखता है। अतः भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।

सम्बन्धित साहित्य शोधकर्ता को अपनी विषय वस्तु के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने में सहायता तो देता ही है साथ ही साहित्यिक निरीक्षण शोध कार्य की अन्तदृष्टि को पैनी करता है इस प्रकार उपलब्ध सूचनायें शोधकर्ता के बहुमूल्य समय को बचाती है।

2. सम्बन्धित साहित्य का उद्देश्य :

गुड, बार तथा स्केट्स ने सम्बन्धित साहित्य के उद्देश्यों की चर्चा करते हुये कहा :–

- क्या उपलब्ध प्रमाण समस्या का समुचित समाधान प्रस्तुत करते हैं।
- यह सर्वेक्षण विचार सिद्धान्त, व्यवस्थाओं तथा उन परिकल्पनाओं को प्रदान करता है, जो अपने अध्ययन की समस्या के निर्माण के लिये महत्वपूर्ण होती हैं।
- यह समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधि का सुझाव देता है।
- तुलनात्मक आँकड़ों को प्राप्त करने व उनके विश्लेषण में सहायता करना।
- सम्बन्धित साहित्य के गम्भीर अध्ययन से अनुसंधानकर्ता के ज्ञानकोष की वृद्धि होती है।

उपर्युक्त उद्देश्यों से स्पष्ट होता है कि सम्बन्धित साहित्य का शोध प्रबन्ध में एक अध्याय जोड़ने तथा ग्रन्थ सूची तैयार करने के लिये आवश्यक नहीं है बल्कि अनुसंधान के सभी स्तरों पर सहायक है।

सूचनाओं के स्रोत :–

- पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाला साहित्य
- पुस्तकें
- वार्षिकी
- किसी विषय पर लेख
- बुलेटिन
- शोध प्रबन्ध
- राजकीय प्रकाशन
- विश्वविद्यालय प्रकाशन
- अन्य प्रकाशन (राजकीय के अतिरिक्त)
- अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन
- ज्ञान कोष
- शिक्षा तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी लेखसार
- ग्रन्थ सूची तथा निर्देशिकायें
- उद्धरण के अन्य स्रोत

3. सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के लाभ :

- यह अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है।
- अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना देता है।
- यह समस्या के चुनाव, विश्लेषण एवं कथन में सहायक होता है।

- यह समस्या के अध्ययन में सूझ पैदा करता है।
- अनुसंधानकर्ता के समय की बचत करता है।
- अनुसंधानकर्ता को त्रुटियों से बचाता है एवं सावधान करता है।
- अध्ययन कार्य में सुधार कर श्रम की बचत करता है।
- समस्या के सीमांकन में सहायक होता है।
- शोध प्रबन्ध के महत्वपूर्ण अंग के रूप में अनुसंधानकर्ता के ज्ञान, उसकी स्पष्टता एवं कुशलता को व्यक्त करता है।

चूँकि शिक्षा का उद्‌देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है इसलिये शोध कार्य को करना अत्यन्त आवश्यक था। इसी आवश्यकता को दृष्टिगत् रखते हुये हम शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन कर रहे हैं। उपर्युक्त शोधकार्य की दृष्टि से यह पहला शोधकार्य है, जो अन्वेषिका ने चुना है क्योंकि शिक्षा के क्षेत्र में इसको स्थान नहीं दिया गया है। अभी तक इस विषय में सम्बन्धित शोधकार्य मेरे संज्ञान में नहीं हुआ है।

अध्याय तृतीय

अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा :

"हमारे सांस्कृतिक विकास का गुप्त रहस्य अनुसंधान में निहित है। अनुसंधान नये सत्यों की खोज द्वारा अज्ञानता के क्षेत्रों को समाप्त कर देता है और वे सत्य हमे कार्य करने की श्रेष्ठतर विधियाँ तथा उत्तमतर परिणाम प्रदान करते हैं।"[1]

किसी भी अनुसंधान कार्य की सत्यता और प्रामाणिकता को ज्ञात करने के लिये कुछ कार्य करना पड़ता है। इन कार्यो को करने के लिये जिन–जिन मार्गों से गुजरना पड़ता है तथा जितनी क्रियायें करनी पड़ती हैं, उन समस्त को 'योग की विधि' कहा जाता है। प्रत्येक विषय के अनुसंधान में विभिन्न क्रियायें करनी पड़ती हैं उनमें परस्पर कुछ भिन्नता हो सकती है। उस समस्त प्रक्रिया को चार प्रधान भागों में बाँटा जा सकता है :–

1. परिकल्पना का निर्माण :

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है, पूर्व चिन्तन। इसका तात्पर्य है कि किसी समस्या के विश्लेषण और परिभाषीकरण के पश्चात् उसमें कारणों तथा कार्य–कारण के सम्बन्ध में पूर्व चिन्तन कर लिया गया है। अर्थात् समस्या का वह कारण हो सकता है। यह निश्चय करने के पश्चात् उसका परीक्षण प्रारम्भ हो जाता है। परिकल्पना के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और न कोई वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान सम्भव है। वास्तव में परिकल्पना के अभाव में अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन क्रिया है। शोधकर्ता अपने अनुभवों और कल्पना के आधार पर उसका निर्माण कर सकते हैं। परिकल्पना की परिभाषा :–

"A hypothesis is a shrewd guess or inference that is formulated and provisionally adopted to explain observed facts or conditions and to guide in further investigation"

(C.V. Good & O.E. Scates, methods of Research, Appleton century crofts, New York, 1954. P.No. 90.)

"परिकल्पना एक अनुमान है, जिसे अन्तिम अथवा अस्थायी रूप से किसी निश्चित तथ्य अथवा दशाओं की व्याख्या हेतु स्वीकार किया गया हो एवं जिसके अन्वेषण को आगे पथ–प्रदर्शन प्राप्त होता है।"

करलिंगर के अनुसार– "परिकल्पना दो या अधिक चर राशियों अथवा चरों के सम्बन्धों का कथन है।"

2. परिकल्पना के प्रकार :

मैकगुइगन के अनुसार परिकल्पनायें दो प्रकार की होती है :

- सार्वभौमिक
- अस्तित्वात्मक

इस प्रकार की परिकल्पनाओं का उद्देश्य सम्बन्धित चरों के विषय में ऐसे सम्बन्ध स्थापित करना होता है कि जिनका स्वरूप सार्वभौमिक हो अथवा परिकल्पना के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष से ऐसे सामान्य नियमों की संरचना करना होता है, जो प्रत्येक कार्य और देश के लिए वैधिक हो, उसमें कम से कम एक चर के अस्तित्व की सही घोषणा करने की सम्भावना हो।

निराकरणीय परिकल्पना के स्रोत :

- संस्कृति
- वैज्ञानिक सिद्धान्त
- प्राप्त परिकल्पनाओं के विश्लेषण
- साम्यानुमान
- व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा
- रचनात्मक चिन्तन द्वारा

- सूझ
- अनुभवी व्यक्तियों से परिचर्चा करके
- पूर्व अनुसंधान के अध्ययन से

एक परिकल्पना जो कि प्रमाणित करने योग्य है, उसे विशिष्ट होना चाहिये। परिकल्पना सिद्ध करने के लिये सूत्रों का होना आवश्यक है। अनुसंधानकर्ता शोध कार्य में प्रायः शून्य परिकल्पना का ही प्रयोग करता है, क्योंकि जहाँ तुलना करना होता है, वहाँ शून्य परिकल्पना का प्रयोग किया जाता है। चूँकि यह निर्देश रहित होती है अतः यह सर्वोत्तम है।

शून्य परिकल्पना :

इस परिकल्पना में यह मानकर शोध कार्य किया जाता है कि दो चरों के मध्य, जिनमें सम्बन्ध ज्ञात करने जा रहे हैं, कोई सम्बन्ध नहीं है। ''Null'' जर्मन भाषा का शब्द है। इसका अर्थ होता है, शून्य, अतः इस परिकल्पना को 'शून्य परिकल्पना' कहते हैं।

शून्य परिकल्पना को नकारात्मक परिकल्पना इस अर्थ में मानते हैं कि इसमें यह मानकर चलते हैं कि दो चरों में कोई सम्बन्ध नहीं है अथवा दो समूहों में किसी विशेष चर के आधार पर कोई अन्तर नहीं है। इस परिकल्पना में कोई धनात्मक कथन नहीं करते हैं।

लघु शोध के लिए प्रस्तुत समस्या में शून्य परिकल्पना को मानकर चलते हैं। जिसका वर्णन निम्नलिखित है :–

- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की बुद्धिलब्धि में अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों में सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की अभिरूचियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

➢ ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के प्रशासन में सार्थक अन्तर नहीं है।

➢ ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में शिक्षा के प्रति रूचियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

1. न्यादर्शन :

प्रस्तुत शोध में किसी जनसंख्या का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसकी कुछ इकाइयों को चुन लिया जाता है। इसे चुनने की प्रक्रिया को 'न्यादर्शन' कहते हैं। इसमें मुख्य चार धारायें होती है :–

चर : जिस गुण विशेषता या अवस्था का अध्ययन करना हमारा उद्देश्य है उसे हम 'चर' कहते हैं।

इकाई : चर की मात्रा को जिस छोटे से छोटे घटक में ज्ञात करते हैं उसे 'इकाई' कहते हैं।

जनसंख्या : इकाइयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना है अभीष्ट है, 'जनसंख्या' कहते हैं। उदाहरण के लिए बटलोई का चावल जनसंख्या है।

न्यादर्श : न्यादर्श समूचे इकाई समूह में से चुनी गयी कुछ ऐसी इकाइयों का समूह जो समूचे इकाई समूह का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करे।

2. न्यादर्शन के लाभ :

न्यादर्शन की आवश्यकता इस बात में है कि जनसंख्या की सभी इकाइयों का अध्ययन न तो वांछनीय है और न सम्भव है। यदि कहीं सम्भव है तो वह बहुत ही कटसाध्य, खर्चीला, अदक्ष एवं त्रुटिपूर्ण है। न्यादर्श चुनने के कुछ लाभ एवं उपयोग हैं।

- **खर्च में कमी :** न्यादर्श का उपयोग सर्वेक्षणों से अधिक होता है, जहाँ सीमित धन, समय, व्यक्तियों एवं साधनों से एक जनसंख्या के विषय में किसी चर का मान प्रस्तुत करना पड़ता है। वहां यदि सभी इकाइयों का सर्वेक्षण किया जाये तो सीमित साधनों से सीमित समय में काम सम्पन्न नहीं होगा।

- **दक्षता में वृद्धि :** परिणाम एवं उसको प्राप्त करने के लिए किये गये व्यय के अनुपात को 'दक्षता' कहते हैं। यदि सभी इकाइयों का अध्ययन न करने से परिणाम में कुछ त्रुटि रह गयी तो भी व्यय में अधिक कमी हो जाने के कारण सर्वेक्षण की दक्षता बढ़ जाती है।

- **परिणाम की शुद्धता :** परिणाम की शुद्धता, प्राप्त करने में लगी हुयी जनशक्ति की कुशलता पर निर्भर है। सभी इकाइयों का अध्ययन करने के लिए अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता होगी, जिन्हें सीमित साधनों से नहीं प्राप्त किया जा सकता। यदि सर्वेक्षण दोषपूर्ण हुआ तो अधिक इकाइयों के अध्ययन से त्रुटि में विस्तार ही होगा।

3. न्यादर्शन के दोषपूर्ण घटक (हानियाँ) :

न्यादर्शन से प्राप्त वर्णनात्मक सांख्यिकी का समिस्टज से महत्वपूर्ण रूप में भिन्न होना दोष है। इसके दो कारण हैं:–

- न्यादर्शीय त्रुटि
- अन्यादर्शीय त्रुटि

अनुसंधान में न्यादर्शन बहुत ही महत्वपूर्ण चरण है। इस प्रक्रिया पर शोध के परिणाम की शुद्धता एवं व्यापकता निर्भर होती है। अतः इसे सावधानी से करना आवश्यक है।

4. न्यादर्शन की विधियाँ :

न्यादर्शन में प्रतिनिधित्व एवं पर्याप्तता का गुण होने के लिए न्यादर्शन की क्रिया को विशिष्ट विधियों द्वारा करना चाहिए। इन न्यादर्शन विधियों को हम दो भागों में बांट सकते है :

- **संभाव्यता न्यादर्शन** : जब जनसंख्या की किसी इकाई को न्यादर्श में सम्मिलित करने के लिए उसका चयन संयोग पर निर्भर करे तो उस चयन विधि को 'संभाव्यता न्यादर्शन' कहते हैं। चयन संयोग पर तब निर्भर करता है जब किसी भी इकाई को न्यादर्शन में सम्मिलित करना या न करना मानव निर्णय पर न निर्भर हो। संभाव्यता न्यादर्शन में कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट इकाई को अपनी इच्छानुसार न्यादर्श में नहीं रख सकता है। इस न्यादर्शन प्रक्रिया के किसी स्तर पर चयन संयोगवश होता है।

संभाव्यता न्यादर्शन के अनेक प्रकार हैं किन्तु यहाँ निम्नलिखित मुख्य प्रकारों का ही वर्णन किया जायेगा :–

1. यादृच्छिकी न्यादर्शन
2. यादृच्छिकी संख्या सारणी का प्रयोग
3. स्तरीकृत यादृच्छिकी न्यादर्शन
4. गुच्छ न्यादर्शन
5. दिशा न्यादर्शन
6. क्रमबद्ध न्यादर्शन

- **असंभाव्यता न्यादर्शन** : असंभाव्यता न्यादर्शन भी इकाई चयन की प्रचलित पद्धति है। इस विधि में शोधकर्ता अपने विवेक से इकाइयों का चयन करता

है। किन्तु न्यादर्शन को प्रतिनिधित्व एवं पर्याप्त बनाने के लिए कुछ नियमों या पूर्व ज्ञानों का उपयोग करता है।

असंभाव्यता न्यादर्शन में निम्नलिखित प्रकार मुख्य हैं :–

1. अंश न्यादर्शन
2. सोद्देश्य न्यादर्शन
3. आकस्मिक न्यादर्शन

7. प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में प्रस्तुत न्यादर्शन विधि और क्षेत्र :

लघु शोध कार्य के लिए शोधकर्त्री द्वारा चुनी गयी समस्या के लिए समय अभाव के कारण प्रत्येक विद्यालय (कॉलेज) की छात्राओं से सम्पर्क किया जाना सम्भव नहीं था। समस्या के लिए 4 विद्यालय चुने गये जिनमें दो विद्यालय अतर्रा के तथा दो बाँदा शहर के लिए गये। अतः लाटरी पद्धति द्वारा दो विद्यालय अतर्रा के राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, अतर्रा तथा सरस्वती इण्टर कॉलेज, अतर्रा के छात्राओं के परीक्षण के लिए चुने गये तथा दो विद्यालय बाँदा शहर के सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर तथा राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, बाँदा को चुना गया। इन कॉलेजों की 50–50 छात्रायें ली गयीं जिनकी संख्या 200 हुई। इन छात्राओं से निम्न समस्याओं के विषय में प्रश्न पूछे गये तथा छात्राओं की उपस्थिति और अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल के आँकड़े इकट्ठा किये गये।

समस्यायें, जिन पर प्रश्न पूछे गये, निम्न हैं :–

1. भवन सम्बन्धित समस्यायें।
2. आवागमन सम्बन्धित समस्यायें।
3. पारिवारिक एवं आर्थिक समस्यायें।
4. सह–शिक्षा सम्बन्धित समस्यायें।

5. विषय कक्ष सम्बन्धित समस्यायें।

6. उपस्थिति सम्बन्धित समस्यायें।

7. पुस्तकालय सम्बन्धित समस्यायें।

8. सांस्कृतिक कार्यक्रम व खेलकूद समबन्धित समस्यायें।

9. शिक्षण कार्य सम्बन्धित समस्यायें।

10. नैतिक शिक्षा, छात्रा–निर्देशन, दैनिक निवृत्ति, पेयजल की समस्यायें।

विद्यालय (कॉलेज) जो परीक्षण के लिये गये हैं :–

1. राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, अतर्रा।

2. सरस्वती इण्टर कॉलेज, अतर्रा।

3. सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, बाँदा।

4. राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, बाँदा।

परीक्षण के लिए प्रत्येक विद्यालय की 50–50 छात्रायें जो माध्यमिक स्तर कक्षा 9 तथा 10 की छात्रायें हैं, चुनी गयीं छात्राओं की संख्या 200 है।

8. *शोध विधि :*

शोध समस्या की विवेचना के बाद यह निर्णय लिया गया कि समस्या के अध्ययनार्थ किस विधि का चयन किया जाये तथा दत्त सामग्री को एकत्रित करने के लिए किन व्यवहारिक कारणों को चुना जाये। अनुसंधान के लिए विद्वानों ने अनेक अनुसंधान विधियों का वर्णन किया है। जिनमें ऐतिहासिक अनुसंधान, वर्णनात्मक तथा सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान, प्रयोगात्मक अनुसंधान मुख्य हैं। प्रयोगात्मक अनुसंधान का उद्देश्य वैज्ञानिक रूप में दो या दो से अधिक तत्वों के सम्बन्ध की व्याख्या करना है।

वास्तव में प्रयोगात्मक अनुसंधान ही सबसे वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति है। यह एक उन्नत विधि है, जिसके अन्तर्गत हम किसी सूक्ष्म समस्या का सूक्ष्म परीक्षण कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सर्वे पद्धति को चुना गया है। इस विधि द्वारा वर्तमान समस्या की वास्तविक परिस्थिति प्राप्त तथ्यों का अध्ययन किया जाता है।

शैक्षिक क्षेत्र में सर्वेक्षणों का वर्गीकरण :

1. विद्यालय सर्वेक्षण
2. प्रलेखी सर्वेक्षण
3. अनुवर्ती सर्वेक्षण
4. मूल्यांकन सर्वेक्षण

इस विधि के अन्तर्गत तथ्यों से सम्बन्धित पर्याप्त मात्रा में दत्त सामग्री एकत्र की जाती है। इसमें किसी व्यक्ति विशेष की ओर ध्यान न देकर सम्पूर्ण जनसंख्या के सामान्यीकरण की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है। अनुसंधान कार्य की स्पष्ट विवेचना संभव होती है तथा उसका निश्चित उद्देश्य होता है। शोधकर्ता और अनुसंधान विषय का सीधा सम्पर्क होता है। इससे व्यक्ति के भावों और विचारों का पता लगता है। सर्वेक्षण, गुणात्मक तथा संख्यात्मक दोनों प्रकार का होता है।

9. अनुसंधान के उपकरण :

अनुसंधानकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि उसे उपकरण विधियों एवं यंत्रों का व्यापक ज्ञान हो, उसे किस प्रकार, किस विधि से आँकड़े प्राप्त होंगे, उनकी क्या विशेषतायें एवं सीमायें हैं, किन अवधारणाओं पर उनका प्रयोग आधारित है तथा उसकी विश्वसनीयता, वैधता और वस्तुनिष्ठता क्या है। इसके साथ ही उसमें उपकरणों के बनाने, प्रयोग करने तथा उनसे प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करने का

कौशल भी होना चाहिए। न्यादर्शन के अलावा अनुसंधान में निम्न उपकरण प्रयोग होते हैं :–

परिवृच्छा आकार : इस वर्ग में वे समस्त उपकरण सम्मिलित किये जा सकते हैं जिनसे किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त की जा रही हो। इस प्रकार में प्रश्न तथा कथन आदि होते हैं जिनके प्रति न्यादर्शन के सदस्य उत्तर देते हैं। इस वर्ग के उपकरण निम्नलिखित हैं–

- प्रश्नावली
- अनुसूची
- चिन्हांकन सूची
- निर्धारण मापनी
- प्राप्तांक पत्र
- मतावली अथवा अभिवृत्ति मापनी
- अवलोकन
- साक्षात्कार
- समाजमिति विधि
- मनोवैज्ञानिक परीक्षण

अनुसंधान सम्बन्धी आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए उपकरणों का चयन करते समय निम्न तथ्यों की ओर ध्यान देना आवश्यक है :–

1. उपकरण द्वारा उद्देश्य को पूरा करना।
2. उपकरण की विश्वसनीयता।
3. उपकरण की वैधता और वस्तुनिष्ठता

4. विभेदीकरण

5. व्यापकता

6. प्रभावीकरण

10. प्रस्तुत शोधकार्य में प्रयुक्त उपकरण :

इस लघु शोध कार्य को करने के लिए स्वनिर्मित उपकरण समस्या प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। समस्या प्रश्नावली में छात्राओं की अधिक से अधिक जानकारी सम्भव है, और जो समस्यायें ऐसी हैं, जिनकी जानकारी साधारण तरीके से सम्भव नहीं है, प्रश्नावली के द्वारा वह भी प्रकाश में आ जाती है।

11. प्रश्नावली का निर्माण :

छात्राओं से सम्बन्धित समस्याओं को जानने के लिये शोधकर्त्री ने अपने सहपाठियों से बातचीत की तथा छात्राओं से सम्बन्धित समस्याओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त छात्राओं की समस्या जानने के लिये पुस्तकालय, शोधग्रन्थ, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों का भी अध्ययन करके भी समस्या सम्बन्धी सूचनायें एकत्रित की। प्रश्नावली सूची तथा इसका परिणाम परिशिष्ट में दिया गया है।

प्रश्नावली की विशेषतायें :–

- यह सूची छात्राओं की प्रमुख समस्याओं पर आधारित है।
- सूची में 50 प्रश्न है, प्रत्येक प्रश्न के आगे हाँ अथवा नहीं में निशान लगाना है।
- इस सूची में उत्तर देने के लिये समय की पाबन्दी नहीं है, फिर भी 15–20 मिनट के अन्तर्गत पूरा होना चाहिये।

- यह परीक्षण एक साथ बहुत सी छात्राओं पर किया जा सकता है।
- इस प्रश्नावली का परीक्षण ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की छात्राओं पर किया गया है, जिनकी कुल संख्या 200 है। ये छात्रायें 9 तथा 10 की हैं।

12. प्रयुक्त प्रश्नावली की कार्य प्रणाली तथा प्रशासन :

विभिन्न विद्यालयों से आँकड़े प्राप्त करने के लिए हमने सर्वप्रथम विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं प्रधानाध्यापिकाओं से सम्पर्क स्थापित किया तथा उन्हें अपने अध्ययन के उद्देश्य एवं महत्व से परिचित कराया एवं सहयोग प्राप्त करने की माँग की । प्रश्नावली का उपयोग 4 विद्यालयों पर यादृच्छिक न्यादर्श विधि के अनुसार प्रयोग किया गया है। छात्राओं को निर्देश दिया कि अपने उपकरणों को ध्यान में रखकर **हाँ** अथवा **नहीं** में टिक (√) करें। आपस में एक दूसरे से सम्पर्क न करें। समय की जल्दी नहीं है। फिर भी 15–20 मिनट में पूरा करना है। छात्रायें कक्षा 9 तथा 10 की सर्वे के लिए चुनी गयी हैं। जो माध्यमिक स्तर की छात्रायें हैं।

सांख्यिकी का अर्थ :

सांख्यिकी शब्द 'संख्या' से बना है। सरल शब्दों में जिसका अर्थ है– 'संख्याओं का शास्त्र एवं विज्ञान।' इसके लिए अंग्रेजी में **'Statistics'** शब्द का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी के इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के **'Status'** शब्द से हुई बतायी जाती है। कुछ विद्वान इतालवी भाषा के **'Statista'** इन दोनों ही शब्दों का प्रयोग राज्य में जनता की स्थिति के लिए किया जाता था। प्रचीनकाल में शासक समय–समय पर राज्य की स्थिति जानने के लिए जन्म, मृत्यु तथा जनसंख्या आदि का हिसाब इसी विधि से याद करते थे। समय परिवर्तन के साथ–साथ राज्य परिवर्तन आया और उनमें व्यापकता आयी। सांख्यिकी का सभी सामाजिक व्यवस्थाओं को ज्ञात करने के लिए प्रयोग होने लगा। सांख्यिकी की कुछ परिभाषायें निम्न है :–

"Statistics may rightly be called the science of average"

- Pro. Brouley

"Statistics deals with the collection, classification and tabulation of numerical facts as the basis of explanation, discription and comparision of phenomenon."

- Lovit

"Statistics in the science which deals with methods of collecting, classifying, presenting, comparing and interpreting numerical data, collected to throw some light on any sphere of inquiry"

- Seligman

13. सांख्यिकीय गणना :

प्रश्नावली प्राप्त होने पर समस्त आँकड़ों की गणना करते हैं। **हाँ** कि लिए अलग अंकों की गणना और **नहीं** के लिए अलग अंकों की गणना की फिर उनका मध्यमान और मानक विचलन ज्ञात किया। समस्याओं के रिजल्ट का छात्राओं की उपस्थिति और परीक्षाफल पर क्या प्रभाव पड़ा उपस्थिति और परीक्षाफल का प्रतिशत ज्ञात किया तथा उपस्थिति और परीक्षाफल के प्रतिशत का मध्यमान और मानक विचलन ज्ञात करके ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं का तुलनात्मक अन्तर ज्ञात किया गया।

14. प्रयुक्त सांख्यिकी :

'सांख्यिकी' अनुसंधान का मूल आधार होती है शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में सांख्यिकी का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है। 'सटकिलफ' के मतानुसार ''सांख्यिकी के अन्तर्गत उन आँकड़ों का संकलन, सारणीयन, प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण सम्मिलित रहता है जिनका संग्रह एक विशेष पद्धति द्वारा निरपेक्ष रूप से किया जाता है और जिनका सम्बन्ध किसी एक पूर्व निश्चित सोद्देश्य से होता है।''

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है। मध्यमान, मानक विचलन और क्रान्तिक निष्पत्ति निकालने के लिये निम्नलिखित सूत्रों का प्रयोग किया गया है:–

➤ **मध्यमान (Mean)**– "जब आँकड़ों को जोड़कर समूह की संख्या से विभाजित किया जाता है तो प्राप्त राशि मध्यमान कहलाती है।"

$$M = A.M. \pm \frac{\left(\sum fd\right)}{N} X \, i$$

जहाँ,

M = मध्यमान

A.M. = कल्पित माध्य

$\sum fd$ = विभिन्न वर्गों की आवृत्ति तथा उनके विचलनों के गुणनफलों का बीजगणितीय योग

N = आवृत्तियों का योग

i = वर्गान्तर का विस्तार एवं आकार

➤ **मानक विचलन** : "मानक विचलन एक अंक वितरण के विस्तार अथवा विचलनशीलता के मापन की स्थाई इकाई है, यह ऐसा सूचकांक है जिसके आधार पर प्रायः एक वितरण के समस्त विस्तार की व्याख्या सरलतापूर्वक की जा सकती है।"

$$S.D. = i\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

जहाँ,

S.D. = मानक विचलन

f = पदों की बारम्बारता

d = विचलन मध्यमान से ज्ञात विचलन

i = वर्गान्तर का विस्तार एवं आकार

$\sum fd$ = विभिन्न वर्गों की आवृत्ति (f) तथा उनके विचलन (d) के गुणनफलों का योग

$\sum fd^2$ = विभिन्न वर्गों की आवृत्ति (f) तथा उनके विचलनों के वर्गों (d^2) के गुणनफलों का योग

N = आवृत्तियों का योग

➢ **क्रांतिक निष्पत्ति (सी0आर0परीक्षण)** : सी0आर0 अनुपात वास्तव में दो मध्यमानों के अंतर तथा इस अंतर की मानक त्रुटि का अनुपात है।

$$\text{सी0आर0 अनुपात } (C.R.) = \frac{M_1 \sim M_2}{\sigma d}$$

जहाँ,

$M_1 \sim M_2$ = दो मध्यमानों का अंतर

σd = दो मध्यमानों के अंतर की प्रामाणिक त्रुटि

σd = $\sqrt{\frac{S_1^2}{n_1} + \frac{S_2^2}{n_2}}$ (n_1 व n_2 के बड़े मानों हेतु)

जहाँ,

C.R. = क्रांतिक निष्पत्ति

S_1 = प्रथम समूह का प्रामाणिक विचलन

S_2 = द्वितीय समूह का प्रामाणिक विचलन

N_1 = प्रथम समूह की संख्या

N_2 = द्वितीय समूह की संख्या

मुक्तांश (df) = n_1+n_2-2

अध्याय चतुर्थ

सांख्यिकी गणना :

प्रश्नावली का रिजल्ट व प्रश्नावली की रूपरेखा अध्याय पाँच में सम्मिलित की गयी है। प्रश्नावली के उत्तर **हाँ** और **नहीं** के रिजल्ट निकालने के बाद ग्रामीण छात्राओं और शहरी छात्राओं की सुविधाओं, असुविधाओं का मध्यमान निकाल कर उनकी तुलना की गयी है। ग्रामीण और शहरी छात्राओं की उपस्थिति और अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल उनके विद्यालय से प्राप्त करके तुलनात्मक अध्ययन किया गया है तथा उनके अन्तर ज्ञात किये गये हैं।

प्रदत्तों का विवेचन और प्रस्तुतीकरण :

निम्नलिखित तालिकाओं को देखने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की सुविधाओं तथा असुविधाओं, उपस्थिति और परीक्षाफल के मध्यमान ज्ञात किये गये हैं जो निम्नलिखित हैः–

1. ग्रामीण छात्राओं की असुविधा का मध्यमान = 30.96
2. शहरी छात्राओं की असुविधा का मध्यमान = 6.8
3. ग्रामीण छात्राओं की सुविधा का मध्यमान = 15.08
4. शहरी छात्राओं की सुविधा का मध्यमान = 41.08
5. ग्रामीण छात्राओं की उपस्थिति का मध्यमान = 51.85
6. शहरी छात्राओं की उपस्थिति का मध्यमान = 56.7
7. ग्रामीण छात्राओं के परीक्षाफल का मध्यमान = 43.8
8. शहरी छात्राओं के परीक्षाफल का मध्यमान = 52.8

तालिका –1

ग्रामीण 100 छात्राओं की सुविधायें प्रश्नावली के हल उत्तर (नहीं) के अनुसार मध्यमान

C.I.	M.V.	F	X	FX	FX^2
26-28	27	8	-6	-48	288
28-30	29	6	-4	-24	96
30-32	31	34	-2	-68	136
32-34	33	35	0	0	0
34-36	35	15	+2	+30	60
36-38	37	2	+4	+8	32
		100		-102	612

AM = 33, i = 2

$$M = AM \pm \frac{\Sigma fd}{N} \times i$$

$$= 33 + \frac{102}{100} \times 2$$

$$= 33 - 2.04$$

$$= 30.96$$

$$S.D. = i\sqrt{\frac{\Sigma fd}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

$$= 2\sqrt{\frac{612}{100} - \left(\frac{-102}{100}\right)^2}$$

$$= 2\sqrt{6.12 - 1.0404}$$

$$= 2 \times 2.253$$

$$= 4.51$$

तालिका –2

शहरी 100 छात्राओं की सुविधायें प्रश्नावली के हल उत्तर (नहीं) के अनुसार मध्यमान

C.I.	M.V.	F	X	FX	FX^2
4-6	5	21	-4	-84	336
6-8	7	34	-2	-68	136
8-10	9	30	0	0	0
10-12	11	9	+2	+18	36
12-14	13	6	+4	+24	96
		100		-110	604

AM = 9 I = 2

M = $\text{A.M.} \pm \frac{\Sigma fd}{N} \times 1$

= $9 + \frac{-110}{100} \times 2$

= 9 – 1.10x2

= 9 – 2.2

= 6.8

S.D. = $i\sqrt{\frac{\Sigma fd}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$

= $2\sqrt{\frac{604}{100} - \left(\frac{-110}{100}\right)^2}$

= $2\sqrt{6.04 - 1.21}$

= 2 x 2.197

= 4.39

तालिका –3

ग्रामीण 100 छात्राओं की सुविधायें प्रश्नावली के हल उत्तर (हाँ) के अनुसार मध्यमान

C.I.	M.V.	F	X	FX	FX^2
12-14	13	6	-6	-36	216
14-16	15	23	-4	-92	368
16-18	17	48	-2	-96	192
18-20	19	11	0	0	0
20-22	21	10	+2	+20	40
22-24	23	2	+4	+4	32
	100			-196	848

A.M. = 19 1 = 2

$$M\,AM \pm = \frac{\Sigma fd}{N} \times 1$$

$$= 19 \pm \frac{-196}{100} \times 2$$

= 19 – 3.92

= 15.08

$$S.D. = i\sqrt{\frac{\Sigma fd}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

$$= 2\sqrt{\frac{848}{100} - \left(\frac{-196}{100}\right)^2}$$

$$= 2\sqrt{8.48 - (3.8416)}$$

$$= 2\sqrt{4.6384}$$

= 2X2.153 = 4.31

तालिका –4

शहरी 100 छात्राओं की सुविधायें प्रश्नावली के हल उत्तर (हाँ) के अनुसार मध्यमान:

C.I.	M.V.	F	X	FX	FX^2
36-38	37	10	-4	-40	160
38-40	39	21	-2	-42	84
40-42	41	31	0	0	0
42-44	43	33	2	66	132
44-46	45	5	4	20	80
	100			+4	456

M = $AM \mp \frac{\Sigma fd}{n} \times 1$ A.M. = 41

1 = 2

= $41 + \frac{4}{100} \times 2$

= 41 + .08

= 41.08

S.D. = $i\sqrt{\frac{\Sigma fd}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$

= $2\sqrt{\frac{456}{100} - \left(\frac{4}{100}\right)^2}$

= $2\sqrt{4.56 - .0016}$

= 2 x 2.135

= 4.27

तालिका –5

ग्रामीण 100 छात्राओं की उपस्थिति का मध्यमान

C.I.	M.V.	F	X	FX	FX^2
40-45	42.5	31	-3	93	279
45-50	47.5	14	-2	28	56
50-55	52.5	19	-1	19	19
55-60	57.5	19	0	0	0
60-65	62.5	7	1	7	7
65-70	67.5	10	2	20	40
		100		-113	401

AM = 57.5

$$M = AM \pm \frac{\Sigma fd}{N} \times i$$

$$= 57.5 + \frac{-113}{100} \times 5$$

$$= 57.5 - 1.13 \times 5$$

$$= 57.5 - 5.65$$

$$= 51.85$$

$$S.D. = i\sqrt{\frac{\Sigma fd}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

$$= 2\sqrt{\frac{401}{100} - \left(\frac{-113}{100}\right)^2}$$

$$= 2\sqrt{4.01 - 1.2769}$$

$$= 5 \times 1.653$$

$$= 8.26$$

तालिका–6

शहरी 100 छात्राओं की उपस्थिति का मध्यमान

C.I.	M.V.	F	X	FX	FX²
40-45	42.5	4	-3	-12	36
45-50	47.5	7	-2	-14	28
50-55	52.5	30	-1	-30	30
55-60	57.5	19	0	0	0
60-65	62.5	18	1	18	18
65-70	67.5	22	2	22	44
		100		-16	156

AM = 57.5 1 = 5

M = $AM \pm \frac{\Sigma fd}{N} \times 1$

= $57.5 + \frac{-16}{100} \times 5$

= 57.5 – .16 x 5

= 57.5 – .8

= 56.7

S.D. = $i\sqrt{\frac{\Sigma fd}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$

= $2\sqrt{\frac{156}{100} - \left(\frac{-16}{100}\right)^2}$

= $2\sqrt{1.56 - .0256}$

= 5 x 1.238

= 6.19

तलिका –7

ग्रामीण 100 छात्राओं के परीक्षाफल का मध्यमान

C.I.	M.V.	F	X	FX	FX^2
30-35	32.5	19	-3	-57	171
35-40	37.5	10	-2	-20	40
40-45	42.5	27	-1	-27	27
45-50	47.5	22	0	0	0
50-55	52.5	14	1	14	14
55-60	57.5	8	2	16	32
		100		-74	284

AM = 47.5

M + $AM \pm \frac{\Sigma fd}{N} \times 1$

= $47.5 + \frac{-74}{100} \times 5$

= 47.5 – .74 x 5

= 47.5 – 3.7

= 43.8

S.D. = $i\sqrt{\frac{\Sigma fd}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$

= $2\sqrt{\frac{284}{100} - \left(\frac{-74}{100}\right)^2}$

= $2\sqrt{2.84 - .5476}$

= 5 x 1.514

= 7.57

<u>तालिका–8</u>

शहरी 100 छात्राओं की उपस्थिति का मध्यमान

C.I.	M.V.	F	X	FX	FX^2
40-45	42.5	24	-3	72	216
45-50	47.5	19	-2	38	76
50-55	52.5	17	-1	17	17
55-60	57.5	17	0	00	0
60-65	62.5	13	1	13	13
65-70	67.5	10	2	20	40
		100		-94	362

AM = 57.5

M + $AM \pm \frac{\Sigma fd}{N} \times 1$

= $57.5 + \frac{-94}{100} \times 5$

= 57.5 – .94 x 5

= 57.5 – 4.7

= 52.8

S.D. = $i\sqrt{\frac{\Sigma fd}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$

= $2\sqrt{\frac{362}{100} - \left(\frac{-94}{100}\right)^2}$

= $2\sqrt{3.62 - .8836}$

= 5 x 1.654

= 8.27

इन परिणामों के आधार पर देखा गया है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की समस्याओं में कितना अन्तर है। ग्रामीण छात्रायें शहरी छात्राओं की तुलना में क्यों पीछे है। समस्याओं की प्रश्नावली को हल कराने से ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की सुविधाओं तथा असुविधाओं की जानकारी प्राप्त की गयी। ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की सुविधाओं का मध्यमान ज्ञात किया गया जो इस प्रकार है। ग्रामीण छात्राओं की असुविधाओं का मध्यमान 30.9 है जबकि शहरी छात्राओं की असुविधाओं का मध्यमान 6.8 है। इसी प्रकार ग्रामीण छात्राओं की सुविधाओं का मध्यमान 15.08 है और शहरी छात्राओं की सुविधाओं का मध्यमान 41.08 है। इसी प्रकार ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की सुविधाओं का एस0डी0 क्रमशः 4.31 और 4.27 है। असुविधाओं का एस0डी0 क्रमशः 4.51 और 4.39 है।

इन समस्याओं के अन्तर के बाद ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की उपस्थिति का मध्यमान निकाला, जो क्रमशः 51.85 और 56.7 है। इन समस्याओं की सुविधाओं और असुविधाओं तथा उपस्थिति का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के परीक्षाफल पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसे सिद्ध करने के लिए ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के परीक्षाफल प्राप्त करके परीक्षाफल का मध्यमान निकाला गया जो इस प्रकार है, ग्रामीण छात्राओं का 43.8 और शहरी छात्राओं का 52.8 है। उपस्थिति का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं का एस0डी0 क्रमशः 8.26 और 6.19 है। परीक्षाफल का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं का एस0डी0 क्रमशः 7.57 और 8.27 है।

उपरोक्त तालिकाओं के मध्यमान ज्ञात करने से पता चलता है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की सुविधाओं एवं असुविधाओं में कितना अन्तर है। इन समस्याओं की सुविधाओं और असुविधाओं के अन्तर में ग्रामीण छात्राओं और शहरी छात्राओं की उपस्थिति और परीक्षाफल पर कितना प्रभाव पड़ता है।

उपरोक्त तालिकाओं के आधार पर ग्रामीण छात्राओं की कक्षाओं में बहुत समस्यायें हैं। शहरी छात्राओं की अपेक्षा ग्रामीण छात्राओं को बहुत कम सुविधायें प्राप्त हैं। जिससे उनकी उपस्थिति पर प्रभाव पड़ता है और परीक्षाफल भी शहरी छात्राओं की अपेक्षा कम है। ग्रामीण छात्राओं के अभिभावक उन्हें पूर्ण सुविधायें प्रदान नहीं करते हैं। घरों से आने–जाने के लिए कोई निजी साधन नहीं होते हैं जबकि

ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालय बहुत दूर पड़ते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावक बालिकाओं की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते हैं। ग्रामीण क्षेत्र की अधिक से अधिक लड़कियाँ किशोरावस्था के बाद घर के काम–काज में लगा दी जाती हैं। अभिभावक छात्राओं को दूर ग्रामीण इलाकों में पढ़ने के लिए नहीं भेजते हैं। क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं का अकेले घर से दूर क्षेत्रों में जाना जीवन के लिए बहुत दुःखदायी है।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव समाज का सर्वांगीण विकास करना है। मानव समाज तभी शिक्षित होगा जब कि स्त्री–पुरूष दोनों की शिक्षा पर ध्यान दिया जाये। शहरी क्षेत्रों की लड़कियाँ पढ़–लिख कर उच्च शिखर पर पहुंच रही हैं। लेकिन ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियाँ आज भी घर की चहार दीवारी में बन्द हैं। ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं का विकास नहीं हो रहा है, इसके लिए प्रशासन तथा अभिभावक जिम्मेदार हैं। केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार को ठोस कदम उठाकर ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के लिए विद्यालय खोलने का प्रयास करना चाहिए।

अगर हम चाहते हैं कि ग्रामीण छात्राओं की शिक्षा में विकास हो तो ग्रामीण छात्राओं की समस्याओं को दूर करने के लिए ग्रामीण अभिभावकों, प्रशासनिक अधिकारियों तथा विद्यालय प्रशासन को ठोस कदम उठाने चाहिए। केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार ऐसी योजनायें बनाये जिसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की छात्रायें ग्रामीण इलाकों में उच्च शिक्षा प्राप्त करें। ग्रामीण छात्राओं को भी शहरी छात्राओं की तरह शिक्षा के क्षेत्र में उच्च शिखर पर पहुँचाया जाये। भारत देश में गांवों की जनसंख्या सबसे अधिक है, लेकिन ग्रामीण छात्राओं (बालिकाओं) की शिक्षा के लिए सरकार ने आज भी कोई ठोस कदम नहीं उठाये।

अगर हम समाज का पूर्ण विकास करना चाहते हैं तो स्त्री वर्ग को भी पुरूषों के समान शिक्षित होने का स्थान दें। क्योंकि यदि स्त्री शिक्षित नहीं होगी तो आने वाली पीढ़ी भी शिक्षित नहीं होगी। इसलिए यह जरूरी है कि बालिकायें शहरी हो या ग्रामीण, शिक्षा के क्षेत्र में उन्हें पूर्ण सुविधायें प्रदान की जायें। जिससे ग्रामीण छात्रायें (बालिकायें) शिक्षा के उच्च शिखर पर पहुंच कर अपने पैरों पर खड़ी होकर आर्थिक स्तर को ऊँचा उठायें। यही देश के लिए भी उपयोगी होगा।

आलोचना अनुपात :

कभी–कभी शोधकर्ताओं को दो समूहों के दो मध्यकों के मध्य तुलना करनी पड़ती है। जैसे– इस शोध में ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की सुविधायें, असुविधायें, उपस्थिति तथ परीक्षाफल के आंकड़ों के मध्यकों के बीच अन्तर किसी सीमान्तक सार्थक है। इस कार्य हेतु शोधकर्ता (व्यक्ति) को आलोचनात्मक अनुपात ज्ञात करना पड़ता है। दो मध्यकों के अन्तर की सार्थकता के लिए दोनों मध्यकों के अन्तर की प्रमाप त्रुटि ज्ञात करनी पड़ती है। इस शोध कार्य के लिए आलोचनात्क अनुपात आगे निकाला गया है।

तालिका–9

विवरण	Mean	S.D
ग्रामीण छात्राओं की सुविधायें	15.08	4.31
शहरी छात्राओं की सुविधायें	41.08	4.27
ग्रामीण छात्राओं की असुविधायें	36.96	4.51
शहरी छात्राओं की असुविधायें	6.8	4.39
ग्रामीण छात्राओं की उपस्थिति	51.85	8.26
शहरी छात्राओं की उपस्थिति	56.7	6.19
ग्रामीण छात्राओं का परीक्षाफल	43.8	7.57
शहरी छात्राओं का परीक्षाफल	52.8	8.27

1. ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की सुविधाओं का आलोचना अनुपात (C.R.)

Criticel Ratio (C.R.) $= \frac{D}{\sigma D}$

$$= \sqrt{\frac{(S_1)^2}{N} + \frac{(S_2)^2}{N}}$$

$$= \sqrt{\frac{(4.31)^2}{100} + \frac{(4.27)^2}{100}}$$

$$= \sqrt{\frac{18.5761}{100} + \frac{18.2329}{100}}$$

$$= \sqrt{\frac{36.809}{100}}$$

$$= \sqrt{0.36809}$$

= 0.61

D = $M_2 - M_1$

= 41.08 – 15.08

= 26

C.R. $= \frac{0.61}{26}$

$= \pm 0.023$

2. ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की असुविधाओं का आलोचना अनुपात (C.R.)

Criticel Ratio (C.R.) $= \frac{D}{\sigma D}$

$$= \sqrt{\frac{(S_1)^2}{N} + \frac{(S_2)^2}{N}}$$

$$= \sqrt{\frac{(4.51)^2}{100} + \frac{(4.39)^2}{100}}$$

$$= \sqrt{\frac{20.3401}{100} + \frac{19.2721}{100}}$$

$$= \sqrt{\frac{39.6122}{100}}$$

$$= \sqrt{0.396122}$$

= 0.629

D = $M_1 - M_2$

= 30.96 – 6.8

= 24.16

C.R. $= \frac{0.629}{24.16}$

$= \pm 0.026$

3. ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की उपस्थिति का आलोचना अनुपात (C.R.)

Criticel Ratio (C.R.) $= \frac{D}{\sigma d}$

$$= \sqrt{\frac{(S_1)^2}{N} + \frac{(S_2)^2}{N}}$$

$$= \frac{\sqrt{(8.26)^2}}{100} + \frac{(6.19)^2}{100}$$

$$= \sqrt{\frac{68.2276}{100} + \frac{38.3161}{100}}$$

$$= \sqrt{\frac{106.5437}{100}}$$

$$= \sqrt{1.065437}$$

= 1.032

D = $M_2 - M_1$

= 56.7 – 51.85

= 4.85

C.R. $= \frac{1.032}{4.85}$

$= \pm 0.212$

4. ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की परीक्षाफल का आलोचना अनुपात (C.R.)

Criticel Ratio (C.R.) $= \frac{D}{\sigma d}$

$\sigma D = \sqrt{\frac{(S_1)^2}{N} + \frac{(S_2)^2}{N}}$

$= \sqrt{\frac{(7.57)^2}{100} + \frac{(8.27)^2}{100}}$

$= \sqrt{\frac{57.3049}{100} + \frac{68.3929}{100}}$

$= \sqrt{\frac{125.6978}{100}}$

$= \sqrt{1.256978}$

$= 1.121$

D $= M_2 - M_1$

$= 52.8 - 43.8$

$= 9$

C.R. $= \frac{1.121}{9}$

$= \pm 0.124$

आलोचना अनुपात विवरण :

उपर्युक्त तालिका में मध्यमान और प्रमाप विचलन (एस0डी0) के अनुसार ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की सुविधाओं, असुविधाओं उपस्थिति, परीक्षाफल के अन्तर को ज्ञात किया जो इस प्रकार है– असुविधाओं का अनुपात 0.026, सुविधाओं का अनुपात 0.023, उपस्थिति अनुपात ± 0.212, परीक्षाफल अनुपात ± 0.124। इन सभी मध्यमानों का तुलनात्मक अनुपात ज्ञात किया गया। इन अनुपातों को ज्ञात करने से दोनों क्षेत्रों की छात्राओं का आलोचना अनुपात ज्ञात किया। शहरी छात्राओं की अपेक्षा ग्रामीण छात्रायें बहुत ही पिछड़ी हैं।

शहरी क्षेत्र की छात्राओं के अभिभावक शिक्षित एवं आर्थिक दृष्टि से अच्छे हैं। जो छात्राओं को अधिक से अधिक सुविधायें देते हैं। शहरों में छात्राओं के लिए गर्ल्स कॉलेज हैं, जिनमें छात्राओं को पूर्ण सुविधायें प्रदान की जाती हैं।

जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यदि कहीं माध्यमिक विद्यालय हैं तो उन विद्यालयों में लड़के–लड़कियाँ एक साथ पढ़ते हैं तथा एक साथ ही कक्षायें लगती हैं। विद्यालय में छात्रायें कई समस्याओं से ग्रसित रहती हैं। ग्रामीण विद्यालयों में अध्यापिकायें नहीं होती हैं क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में कोई गर्ल्स कॉलेज नहीं होते हैं जिससे छात्रायें अपनी समस्याओं को खुलकर नहीं बता सकती हैं।

प्रस्तुत तालिकाओं के मध्यमान एस0डी0 और आलोचना अनुपात निकालने से पता चलता है कि यदि ग्रामीण छात्राओं को शहारी छात्राओं की तरह सुविधायें प्राप्त हों तो हमारी शून्य कल्पना सिद्ध होती है। सार्थकता दोनों की शून्य परिकल्पनायें सिद्ध करती हैं।

अध्याय पंचम्

निष्कर्ष :-

इस अनुसंधान कार्य में देखा गया है कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं की कक्षाओं सम्बन्धित समस्याओं में क्या सम्बन्ध और अन्तर है। इसके लिए ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की 100–100 छात्राओं का अध्ययन किया गया है। कुल मिलाकर 200 छात्राओं का अध्ययन किया गया है।

छात्राओं की कक्षाओं की समस्यायें, भवन सम्बन्धित समस्यायें, आवागमन सम्बन्धित समस्यायें, पारिवारिक एवं आर्थिक समस्यायें, सह–शिक्षा सम्बन्धित समस्यायें, विषय कक्ष सम्बन्धित समस्यायें, उपस्थिति सम्बन्धित समस्यायें, पुस्तकालय सम्बन्धित समस्यायें, सांस्कृतिक कार्यक्रम व खेल–कूद सम्बन्धित समस्यायें, शिक्षण सम्बन्धित समस्यायें, नैतिक शिक्षा सम्बन्धित समस्यायें तथा दैनिक निवृत्ति व पेयजल की समस्यायें आदि से सम्बन्धित समस्याओं के क्षेत्र को लिया गया है। इन समस्याओं की सुविधाओं व असुविधाओं का छात्राओं की उपस्थिति और परीक्षाफल पर क्या असर पड़ता है। इस क्षेत्र का अध्ययन किया गया है।

इन सभी क्षेत्रों का ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं का सर्वेक्षण करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते है–

1. सर्वेक्षण से पता चलता है कि विद्यालय के भवन से सम्बन्धित ग्रामीण छात्राओं के लिये शहरी छात्राओं की अपेक्षा अधिक परेशानियाँ है, क्योंकि शहरी छात्राओं के विद्यालय भवन में हर मौसम के लिये सुविधायें, फर्नीचर आदि की व्यवस्था है, जबकि ग्रामीण छात्राओं के लिये कई समस्यायें हैं।
2. सर्वेक्षण से पता चलता है कि शहरी छात्राओं को आवागमन की सुविधायें प्राप्त है। शहरी अभिभावक अपनी बालिकाओं के लिये आवागमन की निजी व्यवस्था करते है। जबकि ग्रामीण छात्राओं को आवागमन की कोई व्यवस्था

नहीं है और ग्रामीण अभिभावक भी आवागमन के लिये कोई सुविधा प्रदान नहीं करवाते है।

3. शहरी छात्राओं की अधिकतर पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अच्छी है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अधिकतर पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है। शहरी छात्राओं के अभिभावक शिक्षित होते हैं, जबकि ग्रामीण परिवेश के अभिभावक शिक्षित नहीं होते हैं। शहरी अभिभावक अपनी बालिकाओं को उच्च शिक्षा के लिये सभी सुविधायें प्रदान करते है, जबकि ग्रामीण छात्रायें अशिक्षा के कारण पीछे रह जाती है।

4. शहरी क्षेत्रों में छात्राओं के लिये गर्ल्स कॉलेज होते है, जिससे उन्हें पूरी सुविधायें विद्यालय से प्राप्त हो जाती है, ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में सह–शिक्षा व्यवस्था है जिससे ग्रामीण छात्रायें अलग नहीं हो पाती हैं।

5. शहरी क्षेत्रों में कन्या विद्यालय होते हैं। जिनमें विषय कक्ष सम्बन्धित हर सुविधायें प्राप्त होती है, जबकि ग्रामीण छात्रायें अपने विषयानुसार अध्ययन नहीं कर पाती है।

6. शहरी क्षेत्रों की छात्राओं की उपस्थिति अधिक रहती है, जबकि आवागमन की असुविधा के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में छात्राओं की उपस्थिति इतनी अधिक नहीं होती है। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं की शिक्षा पर इसका असर पड़ता है।

7. शहरी विद्यालयों में छात्राओं के लिये पुस्तकालय कक्ष की सुविधा होती है, जबकि ग्रामीण विद्यालयों में पुस्तकों के अभाव के कारण छात्राओं को पुस्तकालय से कोई सुविधा प्राप्त नहीं होती है।

8. शहरी क्षेत्रों में छात्राओं को सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा खेल–कूद सम्बन्धित शिक्षा दी जाती है तथा वार्षिक प्रतियोगितायें आयोजित की जाती है और

विजयी छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किये जाते है, जबकि ग्रामीण छात्राओं को कोई सुविधा नहीं प्रदान की जाती है।

9. शहरी क्षेत्र के विद्यालय प्रशासन शिक्षण कार्य के लिये हर तरह से सुविधा प्रदान करते है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षण कार्य सुचारू रूप से नहीं किया जाता है। इसका प्रभाव उनके परीक्षाफल पर पड़ता है।

10. शहरी छात्राओं को विद्यालय प्रशासन द्वारा दैनिक निवृत्ति, उत्तम पेयजल व्यवस्था तथा कैन्टीन सम्बन्धित अच्छी सुविधायें प्रदान की जाती हैं, जो छात्राओं के लिये सुरक्षित है, जबकि ग्रामीण छात्राओं को सुरक्षा तथा सुविधायें प्रदान नहीं की जाती हैं।

समस्याओं की सुविधाओं और असुविधाओं का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की छात्राओं पर तुलना करने से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों की छात्रायें शहरी क्षेत्रों की छात्राओं से क्यों पिछड़ी हैं ? क्योंकि ग्रामीण छात्राओं पर इन समस्याओं का असर अधिक पड़ता है। ग्रामीण छात्राओं को अधिक से अधिक असुविधा उठानी पड़ती है। ग्रामीण अभिभावक बालिकाओं की शिक्षा में रूचि नहीं लेते है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय बहुत दूर होते है। ग्रामीण अभिभावक अपनी बालिकाओं को उच्च शिक्षा के लिये दूर ग्रामीण क्षेत्रों में भेजना पसंद नहीं करते है।

सुझाव :

उपर्युक्त समस्याओं को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की छात्राओं पर तुलनात्मक अध्ययन करने से उनकी उपस्थिति और परीक्षाफल पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाता है। शहरी छात्राओं की उपस्थिति और परीक्षाफल ग्रामीण छात्राओं से बेहतर है। तुलनात्मक अध्ययन द्वारा पता चलता है कि ग्रामीण छात्राओं को यदि शहरी छात्राओं की तरह हर सुविधायें प्राप्त हो तो उनकी उपस्थिति अच्छी होगी और जब उपस्थिति अच्छी होगी तो लड़कियाँ पढ़ना पसन्द करेंगी, जिससे ग्रामीण छात्राओं

का परीक्षाफल अच्छा होगा। ग्रामीण छात्राओं के शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिये उनकी असुविधाओं को दूर करने पर ध्यान दिया जाये तभी ग्रामीण क्षेत्र की स्त्री शिक्षा का पूर्ण विकास होगा। स्त्री शिक्षा में सुधार के लिये जरूरी है कि ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं को पूर्ण शिक्षित किया जाये, तभी स्त्री शिक्षा का पूर्ण विकास हो सकता है।

ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की कक्षाओं की समस्याओं को दूर करने के लिये सुझाव निम्नलिखित है :–

1. ग्रामीण क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिये सरकार द्वारा गर्ल्स कॉलेज स्थापित किये जाने चाहिये।

2. ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में बालिकाओं के लिये अलग शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिये।

3. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्यापिकायें भी होनी चाहिये जिससे छात्रायें अपनी समस्याओं को खुलकर बता सकेंगी।

4. ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के अभिभावक उनकी शिक्षा के लिये अधिक से अधिक साधन उपलब्ध करायें।

5. सरकार को ग्रामीण छात्राओं को शिक्षित करने के लिये उन्हें छात्रवृत्ति तथा निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था प्रदान करने की घोषणा करनी चाहिये।

6. ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालय के प्रधानाध्यापक तथा अध्यापकों को छात्राओं की असुविधाओं तथा शिक्षण कार्य पर अधिक ध्यान देना चाहियें।

7. ग्रामीण छात्राओं को विद्यालय में आने–जाने के लिये अभिभावकों द्वारा सुविधा प्रदान की जानी चाहिये।

8. केन्द्र सरकार, राज्य सरकार तथा समाज सेवी संगठनों को स्त्री शिक्षा के विकास में ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये। अधिक से अधिक माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एक निश्चित दूरी के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में खोलने के लिये ठोस कदम उठाने चाहिये।

उपर्युक्त सुझावों द्वारा यदि सरकार, समाज और अभिभावक पूर्ण रूप से अवगत होकर ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करें तो यह प्रयास ग्रामीण क्षेत्र की स्त्री शिक्षा की स्थिति के लिये वरदान सिद्ध होगी।

अतः हम कह सकते हैं कि बालिका समुदाय समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तबका है। जिसकी हाल–फिलहाल तक गर्भ से लेकर चिता तक उपेक्षा की जाती रही है। शहरी छात्राओं की तरह ग्रामीण छात्राओं की शिक्षा पर भी पूर्ण ध्यान देना चाहिये जिससे ग्रामीण बालिकाओं को अपना आत्मबल बढ़ाने, परिवार और समाज द्वारा अपना योगदान प्राप्त करने, विद्यालयें में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करने, टीकाकरण तथा स्वास्थ्य के लिये तथा रोजगार के लिये अपनी व्यवसायिक योजना में विकास के लिये सहायता और प्रोत्साहन मिले।

हम सभी के लिये यह अनिवार्य है कि बालिकाओं की दशा सुधारने के लिये किये जा रहे भारत सरकार के ठोस प्रयासों में हाथ बँटायें ताकि उनकी लड़कों के समक्ष पहचान और मूल्याकंन हो सके। इसके लिये जरूरी है कि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में परिवार, समाज, राज्य और स्वैच्छिक क्षेत्र में इसके साझीदार दोनों क्षेत्रों की बालिकाओं के प्रति वास्तविक दिलचस्पी लें और प्राथमिकता के अधार पर ग्रामीण क्षेत्रों में काम करें। केवल तभी यह उदात्त लक्ष्य सफल हो पायेगा।

परिशिष्ट

परिशिष्ट

1. सहायक पुस्तकों की सूची

क. शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा : डॉ0 मालती सारस्वत
आलोक प्रकाशन, लखनऊ

ख. भारतीय समाज मे नारी की स्थिति : जी0के0 अग्रवाल, एल0के0 मुखर्जी, के0के0 गुप्ता
कमल प्रकाशन, आगरा

ग. भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्यायें : डॉ0 कृष्ण गोपाल रस्तोगी
रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ

घ. तुलनात्मक शिक्षा : डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे
विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

ड़. भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्यायें : डॉ0 मालती सारस्वत, डॉ0 एल0बी0 बाजपेयी
आलोक प्रकाशन, लखनऊ–इलाहाबाद

च. अनुसंधान परिचय : डॉ0 पारसनाथ राय
लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा–3

छ. शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग : गैरिट, एच0आई0
पब्लिशर्स, लुधियाना, पंजाब

ज. Fourth Survery of Research in eduction- 1983-88, vol-II., P.no-1402-1412 : M.B. Buch

माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण एवं शहरी परिवेश की छात्राओं की शैक्षिक कठिनाइयों का तुलनात्मक अध्ययन

छात्रा का नाम...कक्षा..........................ग्रामीण / शहरी...........

विद्यालय का नाम...

निर्देश : नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर के लिये 'हाँ अथवा 'नही' में सही का निशान लगाइये। आप सभी प्रश्नों के उपयुक्त सही उत्तर देने की कोशिश करें, आपके द्वारा दी गई सूचनायें गुप्त रखी जायेंगी।

प्र0–1 क्या आपके विद्यालय में पर्याप्त शिक्षण कक्ष हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–2 क्या शिक्षण कक्ष में हवा तथा रोशनी की उचित व्यवस्था है? (हाँ / नहीं)

प्र0–3 क्या शिक्षण में शिक्षण कक्ष सामग्री की उचित व्यवस्था है? (हाँ / नहीं)

प्र0–4 क्या आपके विद्यालय में खेलकूद का मैदान है? (हाँ / नहीं)

प्र0–5 क्या सभी छात्र–छात्राओं के बैठने के लिए पर्याप्त फर्नीचर हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–6 क्या आपका विद्यालय आपके घर से दूर पड़ता है? (हाँ / नहीं)

प्र0–7 क्या आपके विद्यालय द्वारा आवागमन की सुविधा है? (हाँ / नहीं)

प्र0–8 क्या आपके पास विद्यालय आने जाने के साधन हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–9 क्या आपके अभिभावक विद्यालय भेजने आते हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–10 क्या आप विद्यालय आने जाने में थकान का अनुभव करती है? (हाँ / नहीं)

प्र0–11 क्या आपके माता–पिता शिक्षित हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–12 क्या आपके माता–पिता आपकी पढ़ाई में सहयोग देते हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–13 क्या आपके सभी भाई–बहन पढ़ने जाते हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–14 क्या आपके माता–पिता की मासिक आय परिवार के लिये उपयुक्त है? (हाँ / नहीं)

प्र0–15 क्या आपके अभिभावक आपकी उच्च शिक्षा के लिये इच्छुक हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–16 क्या आप कक्षा में बालकों के साथ पढ़ना पसंद करती हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–17 क्या आपके माता–पिता सह–शिक्षा व्यवस्था से संतुष्ट हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–18 क्या आप स्वयं को छात्रों से कमतर समझती हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–19 क्या आप सह–शिक्षा व्यवस्था से संतुष्ट हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–20 क्या आपकी सह–शिक्षा संस्था हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–21 क्या आपके विद्यालय में सभी विषयों की शिक्षा व्यवस्था है? (हाँ / नहीं)

प्र0–22 क्या विज्ञान विषय के लिये प्रयोगशाला की सुविधा है? (हाँ / नहीं)

प्र0–23 क्या विद्यालय में गृह विज्ञान कक्ष की व्यवस्था है? (हाँ / नहीं)

प्र0–24 क्या आपके अध्यापक प्रशिक्षित है? (हाँ / नहीं)

प्र0–25 क्या आपके विद्यालय में कम्प्यूटर कक्ष की व्यवस्था है? (हाँ / नहीं)

प्र0–26 क्या आप विद्यालय ठीक समय पर पहुचती हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–27 क्या आप प्रत्येक विषय के घंटे में उपस्थित रहती हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–28 क्या आपकी अध्यापिका आपकी उपस्थिति पर ध्यान देती हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–29 क्या आपके अभिभावक आपकी उपस्थिति पर ध्यान देते हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–30 क्या आपकों प्रतिदिन विद्यालय आना अच्छा लगता है? (हाँ / नहीं)

प्र0–31 क्या आपके विद्यालय में पुस्तकालय है? (हाँ / नही)

प्र0–32 क्या पुस्तकालय प्रतिदिन समय से खुलता है? (हाँ / नहीं)

प्र0–33 क्या पुस्तकालय में छात्राओं के बैठने की सुविधा है? (हाँ / नहीं)

प्र0–34 पुस्तकालय में आवश्यकतानुसार पुस्तकें मिल जाती हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–35 क्या आपके विद्यालय में संगीत कला की शिक्षा दी जाती है? (हाँ / नहीं)

प्र0–36 क्या विद्यालय में प्रतिवर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं? (हाँ / नहीं)

प्र0–37 क्या आपके विद्यालय में छात्राओं की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता होती है? (हाँ / नहीं)

प्र0–38 क्या आपके विद्यालय में कला, खेलकूद तथा संगीत के प्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकायें हैं? (हाँ/नहीं)

प्र0–39 क्या आपके विद्यालय में गृहोपयोगी वस्तुयें बनाना सिखाने की व्यवस्था है? (हाँ/नहीं)

प्र0–40 क्या आपके विद्यालय में छात्राओं के खेलकूद के पर्याप्त साधन हैं? (हाँ/नहीं)

प्र0–41 क्या आपकी कक्षायें समय तालिका के अनुसार लगती हैं? (हाँ/नहीं)

प्र0–42 क्या आपके विद्यालय में सभी विषयों के अलग–अलग अध्यापक हैं? (हाँ/नहीं)

प्र0–43 क्या अध्यापक/अध्यापिकायें पक्षपात करती हैं? (हाँ/नहीं)

प्र0–44 क्या अध्यापक/अध्यापिकायें आपकी समस्याओं में रूचि लेती हैं? (हाँ/नहीं)

प्र0–45 क्या आपके सभी विषय अध्यापक/अध्यापिकायें समय से आकर अध्ययन कार्य करते है? (हाँ/नहीं)

प्र0–46 क्या आपके विद्यालय में प्रार्थना कक्ष में प्रार्थना अनिवार्य हैं? (हाँ/नहीं)

प्र0–47 क्या आप नैतिक शिक्षा विषय में रूचि रखती हैं? (हाँ/नही)

प्र0–48 क्या आपके विद्यालय में दैनिक निवृत्ति (लघुशंका, शौच) के साधन हैं? (हाँ/नहीं)

प्र0–49 क्या आपके विद्यालय के कैन्टीन व पेयजल के साधन हैं? (हाँ/नही)

प्र0–50 क्या आपके विद्यालय में चिकित्सीय सुविधा है? (हाँ/नहीं)

ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल / समस्यीय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
1	कु0 सीता देवी	2	3	1	4	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	40	45
2	कु0 प्रभा शुक्ला	2	3	1	4	2	3	1	4	1	5	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	16	34	45	41
3	कु0 संगीता देवी	2	3	1	4	2	3	1	4	1	5	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	16	34	50	32
4	कु0 विनीता देवी	2	3	1	4	2	3	1	4	1	5	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	16	34	60	46
5	कु0 संगीता देवी	2	3	1	4	2	3	1	4	1	5	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	16	34	41	47
6	कु0 प्रतिमा देवी	2	3	1	4	2	3	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	16	34	55	33
7	कु0 रागिनी देवी	2	3	1	4	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	52	44
8	कु0 रागिनी यादव	2	3	1	4	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	43	46
9	कु0 मनीषा देवी	2	3	1	4	2	3	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	16	34	60	41
10	कु0 रमा देवी	2	3	1	4	2	3	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	16	34	44	48
11	कु0 अनुराधा देवी	2	3	0	5	2	3	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	15	35	65	42
12	कु0 साधना	2	3	0	5	2	3	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	15	35	70	35
13	कु0 आशा देवी	2	3	0	5	2	3	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	15	35	42	36
14	कु0 राजवती	2	3	0	5	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	15	35	42	36
15	कु0 रंजीता देवी	2	3	2	3	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	46	31
16	कु0 राजेश्वरी	2	3	2	3	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	60	44
17	कु0 रीता देवी	2	3	2	3	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	65	50
18	कु0 सरिता देवी	2	3	1	4	2	3	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	16	34	70	52
19	कु0 राधिका देवी	2	3	0	5	2	3	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	15	35	45	54
20	कु0 गीता देवी	2	3	3	2	0	5	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	16	34	43	49

ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल/समस्यींय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
21	कु0 शालिनी देवी	2	3	4	1	5	0	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	22	28	56	43
22	कु0 कुमकुम	2	3	4	1	5	0	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	22	28	57	47
23	कु0 ममता देवी	2	3	4	1	5	0	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	22	28	52	55
24	कु0 आशा शुक्ला	2	3	4	1	5	0	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	22	28	60	52
25	कु0 शालिनी देवी	2	3	4	1	5	0	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	22	28	66	53
26	कु0 रागिनी देवी	2	3	4	1	5	0	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	22	28	51	41
27	कु0 बीना	2	3	1	4	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	19	31	47	42
28	कु0 गिरजा देवी	2	3	2	4	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	51	44
29	कु0 जयललिता	1	3	1	4	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	44	36
30	कु0 रोमी	2	3	1	4	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	55	38
31	कु0 रिंकी देवी	2	3	1	4	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	42	37
32	कु0 मीना कुमारी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	57	35
33	कु0 साधना गौतम	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	67	34
34	कु0 शान्ती देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	68	30
35	कु0 आरती सविता	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	49	31
36	कु0 नीतू देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	60	55
37	कु0 नीता देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	2	3	17	33	52	56
38	कु0 नीलम देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	41	58
39	कु0 अंजली गुप्ता	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	52	32
40	कु0 पूनम शुक्ला	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	2	3	18	32	66	46

ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल/समस्यींय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
41	कु0 आभा यादव	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	2	3	17	33	42	42
42	कु0 मन्जू	2	3	1	4	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	48	30
43	कु0 बबिता देवी	2	3	1	4	0	5	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	14	36	52	38
44	कु0 राजवती	2	3	1	4	1	4	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	15	35	56	49
45	कु0 मनोरमा देवी	2	3	1	4	0	5	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	2	3	13	37	41	52
46	कु0 अनीता देवी	2	3	1	4	1	4	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	15	35	51	42
47	कु0 शुक्रिया देवी	2	3	0	5	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	2	3	17	33	50	44
48	कु0 मिथलेश	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	60	45
49	कु0 राधा देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	3	2	2	3	18	32	48	46
50	कु0 सरिता देवी	2	3	2	3	4	1	1	4	0	5	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	19	31	52	47
51	कु0 मालती देवी	2	3	2	3	4	1	1	4	0	5	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	19	31	52	47
52	कु0 साधना देवी	2	3	2	3	2	3	1	4	2	3	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	19	31	59	52
53	कु0 लाली देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	19	31	65	43
54	कु0 रीता देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	3	3	2	3	17	33	67	44
55	कु0 रेखा देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	18	32	53	45
56	कु0 आभा रानी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	19	31	54	42
57	कु0 तहशीम बेगम	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	3	2	2	3	18	32	58	46
58	कु0 सुनीता देवी	2	3	2	3	3	2	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	19	31	62	32
59	कु0 रोमी देवी	2	3	3	2	1	4	1	4	0	5	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	17	33	67	30
60	कु0 शबनम	3	3	2	3	1	4	4	1	4	1	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	24	26	60	31

ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल/समस्यींय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
61	कु0 श्रीदेवी	2	3	1	4	4	1	4	1	1	4	2	3	1	4	0	5	3	2	3	2	21	29	62	32
62	कु0 अन्जु देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	2	3	1	4	0	5	3	2	2	3	17	33	42	33
63	कु0 सपना देवी	2	3	1	4	1	4	1	4	1	4	2	3	1	4	0	5	3	2	3	2	15	35	41	38
64	कु0 रहताश बेगम	2	3	1	4	0	5	1	4	1	4	3	3	2	3	0	5	2	3	2	3	14	36	55	45
65	कु0 रजनी देवी	2	3	4	1	4	1	1	4	1	4	2	3	3	2	0	5	2	3	3	2	19	31	65	46
66	कु0 सपना देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	2	3	3	2	0	5	2	3	3	2	23	27	66	32
67	कु0 मंजूलता	2	3	1	4	1	4	1	4	1	4	2	3	3	2	0	5	3	2	3	2	17	33	46	44
68	कु0 अमलेश कुमारी	2	3	1	4	1	4	2	3	2	3	2	3	3	2	0	5	2	3	3	2	18	32	46	47
69	कु0 मारिया बेगम	2	3	1	4	1	4	2	3	2	3	2	3	3	2	0	5	2	3	3	2	18	32	45	48
70	कु0 ममता देवी	2	3	3	4	2	3	2	3	0	5	2	3	3	2	0	5	2	3	2	3	16	36	64	40
71	कु0 दीपा देवी	2	3	1	4	1	4	1	4	2	3	1	4	2	3	0	5	3	2	3	2	16	34	55	50
72	कु0 सुषमा देवी	2	3	1	4	1	4	1	4	2	3	1	4	2	3	0	5	3	3	3	2	15	35	42	52
73	कु0 राधिका देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	43	54
74	कु0 साधना	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	3	2	3	2	19	31	42	32
75	कु0 प्रतिभा देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	44	38
76	कु0 दामिनी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	47	36
77	कु0 शशिबाला	2	3	1	4	1	4	1	4	1	4	2	3	1	4	0	5	2	3	3	2	14	36	44	47
78	कु0 सविता देवी	2	3	1	4	1	4	4	1	1	4	2	3	1	4	0	5	3	2	2	3	17	33	41	37
79	कु0 माधुरी देवी	2	3	1	4	4	1	4	1	1	4	2	3	1	4	0	5	3	2	3	2	21	29	42	50
80	कु0 अलका देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	2	3	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	43	52

ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल/समस्यींय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
81	कु0 राजरानी	2	3	0	5	4	1	4	1	3	2	2	3	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	55	58
82	कु0 रेखा कटियार	2	3	0	5	4	1	4	1	3	2	2	3	1	4	0	5	2	3	2	3	21	29	57	43
83	कु0 प्रतिभा	2	3	1	4	4	1	1	4	2	3	2	3	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	60	31
84	कु0 पूनम मिश्रा	2	3	1	4	4	1	1	4	2	3	3	2	1	4	0	5	2	3	2	3	18	32	52	52
85	कु0 मनु	2	3	1	4	2	3	1	4	2	3	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	18	32	46	43
86	कु0 राधा देवी	2	3	1	4	2	3	1	4	4	1	3	2	1	4	0	5	2	3	3	2	19	31	44	48
87	कु0 ज्योतिमा	2	3	0	5	2	3	1	4	1	4	2	3	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	56	52
88	कु0 सन्तोषी देवी	2	3	1	4	1	4	4	1	4	1	2	3	1	4	0	5	3	2	2	3	20	30	51	44
89	कु0 राजरानी	2	3	1	4	1	4	1	4	4	1	2	3	1	4	0	5	3	2	3	2	18	32	59	43
90	कु0 पूनम देवी	2	3	0	5	1	4	2	3	2	3	2	3	1	4	0	5	2	3	2	3	13	37	45	56
91	कु0 रिंकी पाल	2	3	1	4	4	1	4	1	2	3	2	3	1	4	0	5	2	3	3	2	21	29	49	47
92	कु0 स्नेहलता	2	3	1	4	1	4	1	4	2	3	1	4	1	4	0	5	2	3	3	2	14	36	43	60
93	कु0 ललिता देवी	2	3	1	4	1	4	4	1	1	4	2	3	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	47	60
94	कु0 नीतू देवी	2	3	0	5	1	4	1	4	4	1	1	4	1	4	0	5	2	3	3	2	15	35	60	42
95	कु0 माधुरी यादव	2	3	1	4	4	1	1	4	4	1	1	4	1	4	0	5	2	3	2	3	18	32	48	43
96	कु0 सोनी देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	3	2	1	3	0	5	3	2	2	3	17	33	41	47
97	कु0 प्रियंका देवी	2	3	1	4	4	1	1	4	1	4	2	3	1	4	0	5	2	3	3	2	17	33	40	51
98	कु0 रूबी	2	3	0	5	1	4	1	4	4	1	1	4	1	4	0	5	2	3	3	2	15	35	40	42
99	कु0 गीता देवी	2	3	1	4	1	4	4	1	1	4	2	3	1	4	0	5	3	2	2	3	17	33	40	58
100	कु0 सीता देवी	2	3	1	4	1	4	4	1	1	4	1	4	1	4	0	5	3	2	3	2	16	34	43	47

शहरी क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल/समस्यीय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
1	कु0 राजरानी शुक्ला	5	0	4	1	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	50	40
2	कु0 बन्दना बाजपेयी	5	0	4	1	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	60	52
3	कु0 मानषी कुशवहा	5	0	4	1	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	55	55
4	कु0 सुनीता सिंह	5	0	4	1	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	65	60
5	कु0 लक्ष्मी शर्मा	5	0	4	1	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	65	60
6	कु0 सुनीता गौढ	5	0	4	1	4	1	3	2	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	52	48
7	कु0 सुरजीत कौर	5	0	2	3	2	3	2	3	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	37	13	47	62
8	कु0 मीना देवी	5	0	3	2	3	2	2	3	5	0	3	2	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	66	61
9	कु0 मोनी देवी	5	0	4	1	2	3	3	2	5	0	3	2	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	50	50
10	कु0 प्रभा मिश्रा	5	0	4	1	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	52	48
11	कु0 मालती कुशवहा	5	0	4	1	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	62	60
12	कु0 बिनीता मिश्रा	5	0	4	1	2	3	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	60	55
13	कु0 प्रियंका पाल	5	0	2	3	3	2	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	53	56
14	कु0 रेखा गुप्ता	5	0	3	2	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	54	45
15	कु0 रंजना गुप्ता	5	0	4	1	2	3	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	64	60
16	कु0 प्रभा सिंह	5	0	2	3	3	2	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	67	68
17	कु0 निशा यादव	5	0	4	1	3	2	3	2	0	5	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	52	60
18	कु0 पूनम यादव	5	0	4	1	2	3	3	2	5	0	0	5	1	4	5	0	5	0	5	0	43	7	51	55
19	कु0 आरती देवी	5	0	2	3	3	2	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	56	40
20	कु0 सरस्वती गुप्ता	5	0	2	3	2	3	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	58	51

शहरी क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल/समस्यींय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
21	कु0 अर्चना पाल	5	0	4	1	3	2	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	60	55
22	कु0 मुमताज	5	0	2	3	2	3	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	62	70
23	कु0 उर्मिला शर्मा	5	0	1	4	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	67	70
24	कु0 फरजाना	5	0	3	2	5	0	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	68	68
25	कु0 गौरी देवी	5	0	5	0	2	3	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	55	42
26	कु0 रेखा देवी	5	0	4	1	3	2	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	56	44
27	कु0 सीमा पाल	5	0	4	1	1	4	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	54	70
28	कु0 नूरजहां	5	0	3	2	5	0	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	53	45
29	कु0 शहनाज	5	0	2	3	1	4	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	39	11	58	46
30	कु0 शान्ती पाल	5	0	3	2	3	2	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	52	44
31	कु0 अनीता	5	0	2	3	5	0	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	66	60
32	कु0 प्रतिभा बनर्जी	5	0	4	1	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	67	65
33	कु0 सुषमा मिश्रा	5	0	1	4	4	1	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	69	67
34	कु0 मोनिका गुप्ता	5	0	1	4	3	2	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	70	68
35	कु0 नीता कुमारी	5	0	3	2	5	0	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	45	5	52	50
36	कु0 पूनम तिवारी	5	0	4	1	4	1	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	45	5	56	50
37	कु0 मन्जू कमल	5	0	1	4	1	4	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	39	11	62	55
38	कु0 रजनी गुप्ता	5	0	2	3	3	2	5	0	4	1	4	1	5	0	5	0	5	0	5	0	40	10	55	61
39	कु0 सोनी पाल	5	0	2	3	2	3	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	51	53
40	कु0 अनीता चौहान	5	0	3	2	3	2	3	2	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	60	49

शहरी क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल/समस्यीय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
41	कु0 लल्लीरानी शर्मा	5	0	4	1	2	3	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	70	65
42	कु0 बेबी गौतम	5	0	2	3	3	2	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	66	61
43	कु0 मंजू कुशवाहा	5	0	1	4	1	4	2	3	5	0	4	1	4	1	5	0	5	0	5	0	37	13	45	50
44	कु0 स्नेह प्रभा	5	0	2	3	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	52	40
45	कु0 हरजाना	5	0	3	2	2	3	3	2	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	39	11	61	55
46	कु0 आभा तिवारी	5	0	1	4	2	3	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	64	56
47	कु0 नूरजहा	5	0	1	4	3	2	3	2	5	0	1	4	4	1	5	0	5	0	5	0	37	13	54	45
48	कु0 आशा बनर्जी	5	0	4	1	3	2	3	2	5	0	4	1	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	56	44
49	कु0 प्रभा सोनकर	5	0	2	3	1	4	2	3	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	36	14	62	60
50	कु0 रिचा गुप्ता	5	0	3	2	4	1	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	47	62
51	कु0 कन्चन वर्मा	5	0	2	3	2	3	2	3	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	37	13	54	47
52	कु0 अभिलाषा सिंह	5	0	2	3	2	3	2	3	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	54	47
53	कु0 सुखविन्दर कौर	5	0	1	4	1	4	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	38	12	58	49
54	कु0 सुनीता देवी	5	0	4	1	3	2	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	70	65
55	कु0 प्रभा	5	0	2	3	1	4	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	61	47
56	कु0 प्रियंका श्रीवास्तव	5	0	4	1	4	1	2	3	5	0	4	1	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	62	50
57	कु0 नीलम	5	0	4	1	4	1	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	45	5	66	56
58	कु0 पूजा अग्निहोत्री	5	0	4	1	2	3	3	2	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	67	54
59	कु0 गीता अग्रवाल	5	0	4	1	3	2	2	3	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	52	50
60	कु0 सरिता सिंह	5	0	2	3	2	3	2	3	5	0	3	2	4	1	5	0	5	0	5	0	38	12	55	48

शहरी क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल/समस्यीय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
61	कु0 कल्पना बाजपेयी	5	0	3	2	3	2	3	2	5	0	3	2	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	66	57
62	कु0 रूबी पाल	5	0	2	3	1	4	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	47	58
63	कु0 गुरविन्दर कौर	5	0	2	3	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	68	60
64	कु0 आशा गौतम	5	0	3	2	2	3	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	52	45
65	कु0 सीता देवी	5	0	4	1	2	3	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	54	42
66	कु0 सुमललता शर्मा	5	0	1	4	3	2	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	53	44
67	कु0 रंजना यादव	5	0	4	1	2	3	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	58	47
68	कु0 अनीता निषाद	5	0	2	3	4	1	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	52	44
69	कु0 मीनाक्षी गौड़	5	0	2	3	4	1	2	3	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	61	55
70	कु0 राखी देवी	5	0	1	4	3	2	3	2	5	0	1	4	4	1	5	0	5	0	5	0	37	13	52	45
71	कु0 सीमा गुप्ता	5	0	2	3	4	1	3	2	5	0	5	0	5	0	5	0	5	0	5	0	44	6	43	42
72	कु0 नेहा अवस्थी	5	0	2	3	2	3	3	2	5	0	5	0	5	0	5	0	5	0	5	0	42	8	64	55
73	कु0 संगीता कुशवाहा	5	0	3	2	3	2	3	2	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	60	62
74	कु0 विजयलक्ष्मी	5	0	3	2	3	2	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	53	45
75	कु0 रीता अग्रवाल	5	0	3	2	2	3	3	2	5	0	4	1	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	56	44
76	कु0 सुनीता पाल	5	0	2	3	4	1	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	64	60
77	कु0 साधना तिवारी	5	0	4	1	1	4	3	2	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	39	11	65	62
78	कु0 अमिता मुखर्जी	5	0	1	4	2	3	4	1	5	0	3	2	4	1	5	0	5	0	5	0	39	11	70	66
79	कु0 आशा	5	0	3	2	3	2	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	70	64
80	कु0 रीता देवी	5	0	2	3	2	3	3	2	5	0	4	1	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	62	55

शहरी क्षेत्र की छात्राओं की समस्याओं का रिजल्ट, उपस्थिति, परीक्षाफल/समस्यीय 1-X तक हैं (हां अथवा नहीं के उत्तर अंकों में है)

क्र0सं0	नाम	I		II		III		IV		V		VI		VII		VIII		IX		X		योग		उपस्थिति	अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल
		हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	हां	नहीं	प्रतिशत मे	प्रतिशत मे
81	कु0 रानी गुप्ता	5	0	5	0	2	3	3	2	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	5	0	40	10	66	57
82	कु0 मुमताज जहां	5	0	3	2	3	2	4	1	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	56	50
83	कु0 नरेन्दर कौर	5	0	3	2	4	1	3	2	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	58	48
84	कु0 विनीता देवी	5	0	4	1	2	3	3	2	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	40	10	47	55
85	कु0 आभा शुक्ला	5	0	4	1	3	2	3	2	5	0	3	2	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	61	58
86	कु0 बन्दना श्रीवास्तव	5	0	3	2	4	1	3	2	5	0	4	1	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	58	43
87	कु0 रानी देवी	5	0	2	3	1	4	4	1	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	8	55	46
88	कु0 शालिनी मिश्रा	5	0	4	1	2	3	4	1	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	44	6	69	70
89	कु0 रीता गौतम	5	0	3	2	3	2	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	54	52
90	कु0 तेजविन्दर कौर	5	0	3	2	1	4	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	53	43
91	कु0 रजंना मिश्रा	5	0	3	2	4	1	3	2	5	0	3	2	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	42	40
92	कु0 सुनीता वर्मा	5	0	1	4	2	3	4	1	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	38	12	62	55
93	कु0 सुधा कुशवाहा	5	0	4	1	3	2	2	3	5	0	3	2	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	63	57
94	कु0 पिंकी पाल	5	0	2	3	3	2	4	1	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	44	40
95	कु0 राधा देवी	5	0	4	1	1	4	4	1	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	43	7	58	48
96	कु0 रानी वर्मा	5	0	4	1	4	1	4	1	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	46	4	66	60
97	कु0 लक्ष्मी देवी	5	0	4	1	4	1	4	1	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	46	4	47	61
98	कु0 रेनू पाल	5	0	1	4	2	3	4	1	5	0	2	3	4	1	5	0	5	0	5	0	38	12	68	65
99	कु0 शाहजहां बेगम	5	0	1	4	3	2	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	41	9	52	42
100	कु0 फिरोज बेगम	5	0	1	4	4	1	3	2	5	0	5	0	4	1	5	0	5	0	5	0	42	8	70	65